फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास "जुलूस" में शरणार्थी जीवन

(एम. फिल, उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध)

शोध-निर्देशक :

डा० एस० पी० सुधेश

शोधकर्ता :

राकेश कुमार

भरतीय भाषा केन्द्र

भाषा संस्थान

जवाहरलाल नेहरु विश्व-विद्यालय

नई दिल्ली-110067

1992

AWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY

Gram : JAYEN

Telephone : 652282
652114

New Mehrauli Road,
NEW DELHI-110067.

दिनांक - 17.7.1992

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री राकेश कुमार द्वारा प्रस्तुत " फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यास " जुलूस" में शरणार्थी जीवन " शीर्षक लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत सामग्री का इस विश्व विद्यालय अथवा अन्य किसी विश्वविद्यालय में इसके पूर्व किसी भी प्रदेय उपाधि के लिए उपयोग नहीं किया गया है ।

यह लघु शोध-प्रबन्ध श्री राकेश कुमार की मौलिक कृति है ।

अध्यक्ष
भारतीय भाषा केन्द्र
भाषा संस्थान
जवाहर लाल नेहरू विश्व -
विद्यालय,
नई दिल्ली-110067

(डा० सत्येन्द्र प्रकाश "सुधेश")
शोध निर्देशक
भारतीय भाषा केन्द्र
जवाहर लाल नेहरू विश्व-
विद्यालय
नई दिल्ली - 110067

प्राक्कथन

विभाजन के पूर्व और उसके कुछ समय बाद भी भयंकर साम्प्रदायिक दंगे हुए जिनमें लाखों आदमी बेघर बार हो कर भारत से पाकिस्तान और पाकिस्तान से भारत आए । आने वालों में हिन्दू और जाने वालों में मुसलमान थे । विभाजन की ऐतिहासिक त्रासदी ने सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को इसलिए अधिक प्रभावित नही किया कि हिन्दी क्षेत्र को इसका अनुभव दूर से ही हुआ । इसलिए जो साहित्य रचा भी गया वह प्राय: उन्हीं साहित्यकारों द्वारा रचा गया है जो या तो पंजाब या पूर्वी बंगाल के हैं या फिर पाकिस्तान से यहाँ आये हैं ।

हिन्दी साहित्य में पश्चिम का चित्रण अधिकतर है और बंगाल में पूर्व का । दोनों में एक स्पष्ट दूरी यह देखी जा सकती थी कि न तो हिन्दी में कोई रचना देश के पूर्वी भाग पर आ रही थी, और न ही बंगला में पश्चिमी भाग पर । ठीक इसी समय पूर्वी बंगाल के शरणार्थियों पर बिहार की पृष्ठभूमि में लिखा गया उपन्यास "जुलूस" रेणु जी की अनोखी दूरदर्शिता का परिचायक है और

कदाचित् विषयवस्तु की दृष्टि से यह प्रथम प्रयास भी है ।

फणीश्वर नाथ रेणु हिन्दी कथा साहित्य में विशिष्ट विषय, सम्वेदना और शैली के साथ पदार्पण करते हैं । "मैला-आँचल (1954) ने उन्हें रातो रात चोटी के हिन्दी साहित्य-कारों के समकक्ष बैठा दिया । " परती परिकथा" (1957) से वे और उनकी कृतियाँ आँचलिक साहित्य सृजन का मानदण्ड बन गयीं । किन्तु " मैला आँचल" और "परती परिकथा" के समक्ष सीमित कलेवर का "जुलूस" इन उपन्यासों से विषय सम्वेदना और शैली में विशिष्ट होते हुए भी उस स्थान को नहीं प्राप्त कर सका जिसका कि वह अधिकारी था । यहाँ तक कि हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में गिनती मात्र का भी यश इस उपन्यास को नहीं मिल सका । इन बातों ने मुझे इस उपन्यास के प्रति आकर्षित करने में उत्प्रेरक का कार्य किया ।

"जुलूस" उपन्यास पर आधारित कोई भी स्वतंत्र शोध कार्य नहीं हुआ है । कुछ पुस्तकों में रेणु जी के सम्पूर्ण उपन्यासों के विवेचन के साथ " जुलूस" पर भी हल्का-फुल्का लेखन अवश्य हुआ है । डा० रेणु शाह ने " फणीश्वर नाथ रेणु का कथा शिल्प" में छिट-पुट रूप में कहीं राजनीतिक आर्थिक सामाजिक संदर्भ में तो कहीं भाषा शैली की चर्चा के रूप में कुछ लिखा है । इसी प्रकार डा० कुसुम सोपट ने "फणीश्वर नाथ रेणु की उपन्यास कला " में आँचलिक, राजनीतिक,

सामाजिक, भौगोलिक समस्याओं का सिर्फ सात -आठ पंक्तियों में वर्णन किया है । डा० चन्द्रभानु सीताराम सोनवणे ने भी कुछ इसी प्रकार का प्रयास अपनी कृति "कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु" में किया है । स्पष्ट है कि ये सब प्रयास सामान्य सर्वेक्षण हैं, स्वतंत्र शोध नहीं ।

" फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यास "जुलूस" में शरणार्थी जीवन' विषय पर शोध करने का मेरा मूल उद्देश्य यह है कि इस अध्ययन के माध्यम से शरणार्थी जीवन के परिपेक्ष्य तथा उसकी सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं को समग्र रूप से समझा जा सके ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध चार अध्यायों में विभक्त है । प्रथम अध्याय में राजनीतिक, साम्प्रदायिक सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों का विश्लेषण किया गया है । साथ ही इसमें विभिन्न राजनीतिक दलों एवं साम्प्रदायिक संगठनों की गतिविधियों तथा स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका पर विचार किया गया है जिनके कारण हिन्दुस्तान बँटा और लोग शरणार्थी बनने को विवश हुए ।

द्वितीय अध्याय में शरणार्थियों के सामाजिक जीवन के विषय में व्यापक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । जिसमें शरणार्थियों के सामाजिक जीवन की कुरीतियों अलगांव तथा समायोजन के विभिन्न पक्षों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है ।

तृतीय अध्याय में शरणार्थियों के आर्थिक जीवन के विषय में विस्तार से अध्ययन किया गया है । इसके अन्तर्गत शरणार्थियों के बीच वर्तमान आर्थिक विषमता, व्यवसाय और पूंजीवादी व्यवस्था के प्रसार का अध्ययन किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय में शरणार्थियों के सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन प्रस्तुत है जिसके अन्तर्गत सांस्कृतिक अलगाव, सांस्कृतिक एकीकरण की प्रक्रिया तथा आधुनिकता की चेतना का समुचित विश्लेषण किया गया है ।

इस लघु शोध प्रबन्ध के सम्बन्ध में मुझे अपने शोध निर्देशक डाक्टर सोम प्रकाश "सुधेश" से समय-समय पर जो सारगर्भित सुझाव मिले हैं उनके लिए मै उनका हृदय से आभारी हूँ ।

और अंत में, मैं उन सभी सहयोगियों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनका मुझे सहयोग मिला । विशेष रूप से श्री कैलाश नारायण का जिन्होंने शीघ्र लेखन के लिए प्रेरित किया .....।

राकेश कुमार

॥ राकेश कुमार ॥

अनुक्रम

पृष्ट संख्या

प्राक्कथन .....

अध्याय: एक ..... 1 - 30

शरणार्थी समस्या का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य:

अध्याय: दो ..... 31 - 58

"जुलूस" में शरणार्थियों का सामाजिक जीवन:

क. सामाजिक कुरीतियाँ:

ख. सामाजिक अलगाव :

ग. सामाजिक समायोजन:

अध्याय: तीन ..... 59 - 81

"जुलूस" में शरणार्थियों का आर्थिक जीवन:

क. आर्थिक विषमता:

ख. व्यवसाय:

ग. पूंजीवादी व्यवस्था के दुष्परिणाम:

अध्याय: चार ..... 82 -114

"जुलूस" में शरणार्थियों का सांस्कृतिक जीवन;

क. सांस्कृतिक अलगाव:

ख. सांस्कृतिक एकीकरण:

ग. आधुनिकता की चेतना:

उपसंहार: .....

संदर्भ ग्रंथ सूची ..... I-III

प्रथम अध्याय:

शरणार्थी समस्या का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

§ 1 §

शरणार्थी समस्या का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

शरणार्थी समस्या बहुत कुछ साम्प्रदायिक समस्या से जुड़ी है । यह इसलिए भीकि भारत ही नहीं वरन् सारे संसार के शरणार्थी प्राय: एक ही अल्प सम्प्रदाय से सम्बद्ध रहें हैं । यथा जर्मनी के यहूदी, श्री लंका के तमिल या फिर भारत- पाकिस्तान के हिन्दू सिख या मुसलमान । अलबता सम्प्रदायवाद के अलावा इसके और भी कारण हो सकते हैं जैसे राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक उत्पीड़न इत्यादि । राष्ट्रिक इकाइयों और अल्प संख्यकों की समस्या भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की अन्यतम समस्या थी । आन्ध्र वासियों मलयालियों, कर्नाटकवासियों महाराष्ट्रियों बलूचियों इत्यादि राष्ट्रिक इकाइयों एवं मुसलमानों सिखों, दलित जातियों आदि अल्प संख्यको में जैसे-जैसे राजनीतिक जागरण आया वैसे-वैसे राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए किए गए संयुक्त राष्ट्रीय आंदोलन और स्वातंत्र्योतर भारत की भावी राज्यव्यवस्था की दृष्टि से यह प्रश्न विशिष्ट और निर्णायक महत्व का होता गया । राष्ट्रिय इकाइयों और अल्प-संख्यकों की समस्या भारत की ही तरह आस्ट्रिया, हंगरी, रूस आदि

देशों के भी आधुनिक इतिहास में उदित हुई है । और उन देशों में भी इसके समाधान की आवश्यकता पड़ी है ।

ऐसा भी नहीं कि अपने ऐतिहासिक विकास के आधुनिक चरण में हर देश को राष्ट्रिक इकाइयों के प्रश्न का सामना करना पड़ा हो । उदाहरणार्थ, अंग्रेजों और फ्रांसीसियों को अपने राष्ट्रगत समेकन और फिर परवर्ती युग के अपने सम्पूर्ण विजयीशील अस्तित्व के दिनों में भी इस समस्या का सामना नहीं करना पड़ा था इसके विपरीत पूर्वी यूरोप के देशों जैसे आष्ट्रो हंगेरियन साम्राज्य और बालकन क्षेत्र में इस सवाल से निपटना पड़ा [1] ।"

" आधुनिक भारत के इतिहास में साम्प्रदायिक समस्या का अर्थ है, विभाजन से पूर्व जन संख्या के 26 करोड़ हिन्दू समुदाय का लगभग 9 करोड़ 40 लाख मुस्लिम समुदाय के साथ सम्बधों का विश्लेषण । भारत में अल्प संख्यकों का वास्तविक रूप साम्प्रदायिक है, और इसे अधिक जटिल बनाने में एक तीसरी शक्ति - ब्रिटिश राज की बहुत बड़ी भूमिका है । ब्रिटिश काल के आखिरी तीन दशकोंमें साम्प्रदायिकता का अत्यन्त विकसित रूप दिखाई पड़ता है, जिसकी अन्तिम परिणति " द्विराष्ट्रीय सिद्धान्त" के जन्म से होता है । इसी

---

1. ए0 आर0 देसाई: भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ट भूमि, पृष्ट संख्या - 307

द्विराष्ट्रीय सिद्धान्त के कार्यान्वयन का परिणाम धर्म के आधार पर उप महादीप का विभाजन था [2] • और इस विभाजन के कारण से ही भारतीय परिप्रेक्ष्य में मानव की शरणार्थी जीवन सदृश्य विवशता पूर्ण अवस्था भी अस्तित्व में आई ।

§क§ साम्प्रदायिकता: अर्थ एवं प्रकृति

साम्प्रदायिकता सामान्य तया एक ऐसी अवधारणा के रूप मे यह बात प्राय: स्वीकार की जाती है कि समान धर्म वाले लागों के सामाजिक राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक हित और उनकी अस्मिताएँ समान होती ही है । किन्तु दूसरी दृष्टि से देखा जाय तो मनुष्य एक बहुरूपी सामाजिक प्राणी है, जो एक साथ कई पहचान रखता है । उसकी पहचान उसके देश क्षेत्र, लिंग, व्यवसाय, परिवार के अन्तर्गत उसके अपने स्तर धर्म, जाति आदि के आधारों पर हो सकती है । सम्प्रदायवादी इन तमाम आधारों मे से सिर्फ धार्मिक पहचान को ही चुनता है और इसे आवश्यकता से कही अधिक महत्व देता है । परिणामत: सामाजिक

---

2. सं. रामलखन शुक्ल: आधुनिक भारत का इतिहास, पृ0 464

सम्बन्ध, राजनैतिक समझ तथा आर्थिक संघर्ष धार्मिक पहचान के आधार पर व्याख्यायित किये जाते है । संक्षेप में, अन्य महत्त्वपूर्ण पहलुओं को नजरअंदाज कर के धर्म को अनावश्यक रूप से अधिक महत्त्व देना ही सम्प्रदायवाद का प्रारम्भ है ।

साम्प्रदायिकता के प्रसार के लिए सम्प्रदायवादियों ने प्रचार तथा तर्क के स्तर पर तीन बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित किया । प्रथमत: यह कि किसी धार्मिक सम्प्रदाय के सभी सदस्यों के हित समान होते हैं यथा, यह तर्क कि मुसलमान जमींदार और किसान के हित एक है क्योंकि दोनों एक ही सम्प्रदाय के सदस्य है। यही तर्क सिख अथवा हिन्दू सम्प्रदाय पर लागू होता है । द्वितीयत: किसी धार्मिक सम्प्रदाय के सदस्यों के हित दूसरे सम्प्रदाय के सदस्यों से भिन्न होते है या यों कहें कि सभी हिन्दुओं के हित मुसलमानों के हितों तथा इसी प्रकार मुसलिमों के हित हिन्दुओं के हितों से भिन्न हैं । तृतीयत: न केवल इन हितों में भिन्नता थी बल्कि ये हित आपस में टकराव पूर्ण एवं विपरीत भी है । इसका अर्थ यह हुआ कि अन्तर्विरोधी हितों के कारण हिन्दुओं एवं मुसलमानों का सह अस्तित्व सम्भव नहीं है ।

निश्चित रूप से ये तर्क गलत हैं और सामाजिक राजनैतिक हितों की गलत समझ पर आधारित हैं और वास्तविकता से कहीं दूर हैं । पूरे मध्यकालीन परिवेश में हिन्दुओं-मुसलमानों का एक काफ़ी बड़ा भाग साम्प्रदायिक सद्भाव के माहौल में सह अस्तित्व मान था । यद्यपि केन्द्रीय सता के कमजोर पड़ते ही सामंती विद्रोहों की घटनाओं से मध्यकालीन इतिहास भरा पड़ा है, तथापि मुस्लिम सताधारियों के विरूद्ध इन चुनौतियों का अधार साम्प्रदायिक नही था । विद्रोहों की अगुआई करने वाले हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही थे । उनके अधीन युद्ध करने वाले सैनिक भी दोनों सम्प्रदायों के थे । धर्म विशेष का अनुयायी होना उनकी स्वामी भक्ति में बाधक नहीं होता था । इन तथ्यों की अधिकारिक पुष्टि साइमन कमीशन की रिपोर्ट §1930§ में किया गया है । रिपोर्ट में यह स्वीकार किया गया है कि ब्रिटिश प्रान्तों की तुलना में भारतीय रियासतों के सीमा क्षेत्रों में साम्प्रदायिक वैमनस्य नही के बराबर है [3] ।" स्पष्ट है देशी रियासतों में उस राजनैतिक प्रतिस्पर्धा का अभाव था, जिसका जन्म ब्रिटिश प्रान्तों में बीसवीं शताब्दी

---

3. सं0 रामलखन शुक्ल: आधुनिक भारत का इतिहास, पृ0 - 464

की प्रतिनिधि शासन प्रणाली के प्रारम्भ से हुआ । साम्प्रदायिकता आधुनिक भारत में ही उपजी । यह उतनी ही आधुनिक है, जितना कि औपनिवेशिक शासन । साम्प्रदायिकता की व्याख्या आधुनिक भारत में हुए राजनैतिक एवं आर्थिक विकास के संदर्भ में की जा सकती है ।

(ख) उत्पत्ति एवं विकास:

साम्प्रदायिकता की जड़ें तलाश करने के उद्देश्य से हमें इतिहास में कितना पीछे जाना चाहिए ? यह विवाद की बात है । कुछ विद्वानों ने मध्य कालीन भारत में इस समस्या की जड़े ढूढ़ने की कोशिश की है । उनका कथन है कि भारत में धार्मिक मतभेद हमेशा रहे हैं और हिन्दू समाज तथा मुस्लिम समाज के रूप में दो समाज सदैव अस्तित्व मान रहें है और भारतीय समाज जैसी कोई चीज नहीं रही है । किन्तु इसका खण्डन उन विद्वानों द्वारा किया गया है जो मानते हैं कि भारतीय समाज में विघटन कारी शक्तियों की भूमिका को अतिशयोक्ति के रूप में नहीं पेश किया जाना चाहिए । भारतीय समाज में ऐसी शक्तियाँ भी मौजूद रही है जिन्होंने विभिन्न जातियों सम्प्रदायों

उप सम्प्रदायों आदि के लोगों को एकीकृत किया है । दर असल साम्प्रदायिकता की उत्पति अंग्रेजी साम्राज्य के भारत में प्रवेश करने के साथ देखी जानी चाहिए जिसका प्रभाव भारतीय समाज एवं अर्थ व्यवस्था पर अदभुत रूप से पड़ा ।

§ग§ सामाजिक एवं आर्थिक कारण:

भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के उदय ने शक्ति संरचना में भारी परिवर्तन किए, जिनका प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर पड़ा । बंगाल में जहाँ कि उच्च वर्गीय मुसलमानों का सेना के उच्च पदों, प्रशासन एवं न्यायलयों में रोजगार पर अर्ध अधिपत्य था, इसका सबसे अधिक प्रभाव देखने में आया । धीरे-धीरे भूमि पर उनका आधिपत्य कम होने लगा । विशेष रूप से सन् 1793 ई. के स्थायी बन्दोबस्त तथा 1833 ई. में अंग्रेजी के राज्यभाषा बनने के साथ उच्चवर्गीय मुसलमानों की शक्ति सम्पति तथा प्रभाव में कमी आई । ऐसा होने के साथ ही भारतीय समाज की अपनी अलग विशेषता की वजह से मुसलमानों का नुकसान सामान्यत: हिन्दुओं के पक्ष में गया, जिन्होंने शिक्षा एवं अन्य आधुनिकीकृत शक्तियों पर मुसलमानों की अपेक्षा अधिक अधिकार प्राप्त कर लिया ।

मुसलमान इस दौड़ में काफी पिछड़ गये । हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों ने शिक्षा संस्कृति , नये व्यवसाय तथा प्रशासन में पदों जैसी सरकारी सुविधाओं को बाद में अपनाया । परिणामत: हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों में पुरानी परम्पराओं, रवैयों और मूल्यों के पुनर्मूल्यांकन के लिए बौद्धिक जागरण भी बाद में हुआ। इस बिन्दु पर राजा राम मोहन राय तथा सर सैयद अहमद खान के बीच अन्तराल का कथन उदाहरण में स्पष्टता से देखा जा सकता है । समस्या के इस पहलू का समाहार हम जवाहर लाल नेहरू की पुस्तक " द डिस्कवरी ऑफ इण्डिया " से एक उद्धरण देकर कर सकते है:

" हिन्दू और मुस्लिम मध्यम वर्गों के विकास में एक पीढ़ी या उससे अधिक का अन्तर रहा है और यह अन्तर अनेक दिशाओं, राजनीतिक, आर्थिक तथा अन्य में प्रकट होता रहता है । यह पिछड़ना ही मुसलमानों के बीच भय की मनःस्थिति पैदा करता है । [4] इस अन्तराल के कारण मुसलमानों के बीच कमज़ोरी तथा असुरक्षा की भावना ने परम्परागत विचार प्रक्रिया तथा धर्म पर उन्हें आश्रित बना दिया ।

---

4. प्रो० विपिन चन्द्र: आधुनिक भारत, पृ० - 201

इस प्रकार भारत में साम्प्रदायिकता शैक्षिक, राजनैतिक एवं आर्थिक रूप में असमान विभिन्न सम्प्रदायों के बीच रोजगार के लिए संघर्ष थी । इतिहासकार के0 वी0 कृष्ण § प्राब्लम्स ऑफ माइनोरिटीज ।939 § उन पहले विद्वानों में से एक हैं जिन्होंने साम्प्रदायिकता की समस्या पर कलम उठायी । उनका मानना है कि यह संघर्ष सामंती माहौल में अंग्रेजी साम्राज्यवाद द्वारा उनकी प्रति संतुलन की नीति द्वारा भारतीय पूंजीवाद के विकास के दौर में पैदा हुए । अन्य शब्दों में यह साम्राज्यवादी पूंजीवादी- सामन्तवादी ढाँचे की उपज थी । इस बिन्दु पर पहुँचकर साम्प्रदायिकता के विकास में अंग्रेजी साम्राज्यवाद एवं राजनीति की भूमिका पर दृष्टि डालना उपयुक्त होगा ।

§घ§ अंग्रजी नीति की भूमिका:

दरअसल अंग्रेजो ने साम्प्रदायिकता को जन्म नहीं दिया । जैसा कि उपर विवेचित है, कुछ सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक मतभेद पहले से ही मौजूद थे । अंग्रेजों ने इनका निर्माण नहीं किया बल्कि सिर्फ इन परिस्थितियों का लाभ उठाया जिससे उनका राजनैतिक

उद्देश्य पूरा हो सके । ऐसी स्थिति में " फूट डालो और राज करो " की अंग्रेजी नीति केवल इसलिए सफल हो सकी क्योंकि समाज की आन्तरिक आर्थिक, सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियाँ उस सफलता में भूमिका निभा रही थी ।

साम्प्रदायिकता से सम्बन्धित ब्रिटिश नीति का इतिहास आसानी से 1857 के विद्रोह के तुरंत बाद के दौर से रेखांकित किया जा सकता है । 1857 के बाद ब्रिटिश साम्राज्य की सुरक्षा के लिए नई नीतियों का प्रतिपादन किया गया । इसमें अब उदारवादी और साम्राज्यवादी नीतियों का समावेश हुआ । इसके साथ ही अंग्रेजी नीतियों का दोहरा चरित्र सामने आया । पनप रहे वर्गों की उन्हीं इच्छाओं एवं मांगों की पूर्ति की गई जो कि साम्राज्यवादी हित से सम्बद्ध थीं । इस प्रकार उन्हें मित्र भी बनाया गया और एक दूसरे के विरूद्ध खड़ा भी किया गया । फलतः इन विभिन्न वर्गों के हितों के टकराव का लाभ भी अंग्रेजों द्वारा उठाया गया । ब्रिटिश नीति की यही भूमिका रही जो रियायत, प्रति संतुलन एवं बल प्रयोग पर आधारित थी । इस बिन्दु पर सरकार के समक्ष मुख्य रूप से दो उद्देश्य थे । प्रथमतः यह कि समाज में समर्थक बनाने के लिए तथा नियंत्रण

एवं प्रभाव बढ़ाने के उद्देश्य से कुछ वर्गों को संरक्षण देना ताकि वे समाज में अपने आधार को मजबूत कर सकें । द्वितीयतः यह कि भारतीयों में एकता न हो सके क्योंकि सभी वर्ग एक विचारधारा के अन्तर्गत हो जाने पर साम्राज्य के लिए खतरा पैदा कर सकते थे । इसी उद्देश्य से बीसवी सदी में राष्ट्रीय विचारधारा, संगठन और मांगो के न्याय संगत होने तथा उनकी प्रमाणिकता को नकारने के उद्देश्य से साम्प्रदायिक मांगो एवं संगठनो का प्रोत्साहित किया गया । एक ओर मुसलमानों को कांग्रेस से दूर रखने का भर सक प्रयास किया गया तो दूसरी ओर कांग्रेस के दावों को यह कहकर ठुकराया गया कि वह मुसलमानों का प्रतिनिधित्व नही करती । साम्प्रदायिक तनाव को बने रहने तथा इसको और बदतर होने को अंग्रेजी शासन ने अपनी सत्ता बनाये रखने के लिए एक बहाने के रूप में प्रयोग किया । अंग्रेजी तर्क यह थे कि कांग्रेस, मुस्लिम लीग और हिन्दू महासभा आपस में समझौता नहीं कर सकते, जनता विभाजित है, इसलिए ब्रिटिश शासन के खत्म होने पर भी वे सरकार बनाने की स्थिति में नहीं होंगे । इस प्रकार अंग्रेजी शासन के भारतीय विकल्प की असम्भावना पर निरंतर जोर दिया गया । अतएव पहले साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन देना, फिर इसी को अपने राजनैतिक लाभों के लिए इस्तेमाल करना अंग्रेजी नीति का अंग था ।

§ड. § उन्नीसवी शताब्दी में पुनरूत्थानवाद:

उन्नीसवीं शताब्दी में पुनरूत्थानवाद के रवैये ने साम्प्रदायिकता के विकास में काफ़ी योगदान दिया । पुन - रूत्थानवाद उस स्वाभिमान की पुर्नप्राप्ति का प्रयास था, जिसे प्राचीन युग को गौरवान्वित करके प्राप्त करने की कोशिश की गई । यह भारत के वर्तमान अपमान के संदर्भ में क्षतिपूर्ति के रूप में किया जा रहा था । यद्यपि पुनरूत्थान ने अतीत के गौरव को स्थापित किया तथापि इसने कुछ समस्याएँ भी खड़ी कर दी । इसकी एक समस्या हिन्दुओं और मुसलमानों के भिन्न गौरवपूर्ण उद्गम का प्रस्तुतीकरण थी । इस प्रकार के प्रस्तुतीकरण ने पूर्व अस्तित्वमान धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक आर्थिक मतभेदों को एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य दे दिया । हिन्दुओं के सुधारवादियों ने भारत के प्राचीन युग को गौरवांन्वित करते हुए मध्ययुगीन भारत को बर्बरता का युग बताते हुए उसकी भर्त्सना की । इसी प्रकार मुसलमानों ने अपने गौरव और महानता की तलाश के लिए अरब के इतिहास में शरण ली । ऐसे समय में जबकि हिन्दू और मुसलमान एक-बद्ध होने चाहिए थे, ऐतिहासिक रूप से भिन्न भिन्न इकाई

के रूप में उभार कर सामने लाये गये । यह क्षति बीसवीं सदी में और स्पष्ट रूप से सामने आयी जब मुहम्मद अली जिन्ना ने अपने "द्विराष्ट्रीय सिद्धान्त" के आधार पर कहा कि " भारत एक राष्ट्र नहीं बल्कि हिन्दू और मुस्लिम राष्ट्र के रूप में दो राष्ट्र है ।" इसका अन्य कारण उन्होंने यह भी बताया कि " प्राय: एक का नायक दूसरे का शत्रु है और इसी तरह उनकी हार और जीत अलग-अलग है । ऐसे दो राष्ट्रों को बहुसंख्यक अल्प संख्यक के रूप में एक राज्य में नाथ देने से लगातार असंतोष और विक्षोभ बढ़ेगा ही, और ऐसे राज्य की सरकार के लिए जो ताना-बाना होगा वह नष्ट होकर रहेगा [5] ।"

(च) उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के राजनैतिक रवैये:

उन्नसवीं शताब्दी के उतरार्ध में मुसलमानों एवं हिन्दुओं के बीच कुछ इस प्रकार के राजनैतिक रवैयों का विकास हुआ जिसने असाम्प्रदायिक होते हुए भी बाद में विकसित हुई साम्प्रदायिक राजनीति के लिए पृष्टभूमि तथा कुछ औचित्य अवश्य प्रदान किया । इस संदर्भ में सर सैयद अहमद खान का उदाहरण लिया जा सकता है।

---

5. ए0 आर0 देसाई: भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक - पृष्टभूमि, पृष्ट सं0 - 335

सैयद अहमद खान की राजनीतिक समझ और गति - विधियां सदैव एक दोहरेपन से पूर्ण रहीं । उन्होंने अपनी गतिविधियों का आरम्भ साम्प्रदायिक भेदभाव के बिना किया । उनका उद्देश्य मुसलमानों में सुधार लाना, आधुनिक शिक्षा की ओर प्रेरित करना तथा उन्हें सरकारी संरक्षण दिलाना था । इसके लिए उन्होंने अलीगढ़ कालेज की स्थापना की जिसे हिन्दुओं, पारसियों और इसाइयों द्वारा आर्थिक सहायता मिला । कालेज में हिन्दू छात्र और अध्यापक भी आये । स्वयं सैयद अहमद खान ने हिन्दू और मुस्लिम सद्भावना के समर्थन में आवाज उठायी ।

किन्तु 1885 में कांग्रेस की स्थापना के बाद इनकी राजनैतिक समझ में काफी परिवर्तन आया । उन्होंने कांग्रेस को हिन्दू दल के रूप में आरोपित करते हुए मुसलमान विरोधी दल बताकर उसका विरोध किया । साम्प्रदायिकता के कुछ मुलभूत तर्कों की नींव रखते हुए एक तर्क उन्होंने यह दिया कि हिन्दू बहुसंख्यक हैं और यदि अंग्रेजों ने अपना शासन समाप्त करके शासन की बागडोर भारतीयों के हाथ में दे दी तो मुसलमानों के हितों से बहुसंख्यकों के हितों को नुकसान पहुँचेगा । सैयद अहमद खान ने इसी आधार पर कांग्रेस की लोक तांत्रिक मांगों का विरोध किया । इसका विरोध करते हुए उन्होंने

कहा - " वैसा होने पर मुसलमान अपने हितों की रक्षा नहीं कर सकेंगें । क्योंकि वह " पासे का एक ऐसा खेल होगा जिसमें एक के हाथ में चार - पासे होंगे और दूसरे के हाथ में सिर्फ एक" सैयद अहमद और उनके सहचारियों ने मुसलमानों की ऐतिहासिक भूमिका और राजनीतिक महत्व को मान्यता देने की माँग करते हुए कहा कि सरकारी नौकरियों, विधायिकाओं आदि में मुसलमानों के लिए आरक्षण होना चाहिए तथा विधान परिषदों में उनकी संख्या हिन्दुओं से कम न हो । लेकिन अपनी माँग के समर्थन में उन्होंने कोई जवाबी राजनीतिक दल नहीं बनाया क्योंकि आंदोलन की राजनीति अंतत: सरकार विरोधी हो जाती है । इसलिए मुसलमानों को राजनीति माँग से दूर रहने की सलाह दी। औपनिवेशिक शासकों ने इन स्थापनाओं में निहित साम्प्रदायिकता के तर्क को समझने में देर नहीं की और उसके समर्थन और संरक्षण में लग गए " [6] । इसी के समानांतर हिन्दू साम्प्रदायिकता भी जन्म ले रही थी ।" हिन्दू मध्यवर्ग ने भारतीय इतिहास की औपनिवेशिक व्याख्या को स्वीकार कर ली और मध्य युग के अत्याचारी मुस्लिम शासन तथा मुसलमानों को जुल्म से हिन्दुओं को बचाने वाले

---

6. प्रो. विपिन चन्द्र: भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, पृ.-385

ब्रिटिश शासकों की चर्चा करने लगे थे । संयुक्त प्रान्त और बिहार में उन्होंने हिन्दी को साम्प्रदायिक रंग दे डाला और कहना शुरू किया कि हिन्दी हिन्दुओं की भाषा है और उर्दू मुसलमानों की । 1890 के दशक के पूर्वार्ध में पूरे भारत में गो-वध विरोधी प्रचार किया जाने लगा और मजे कि बात यह है कि यह सारा प्रचार मुसलमानों के खिलाफ था । ब्रिटिश छावनियों में बड़े पैमाने पर गाएँ कटती थी पर उसका कोई प्रतिवाद नहीं किया गया [7] ।" अतत: हिन्दू सम्प्रदाय वादियों ने भी मुसलमानों की देखा-देखी विधायिकाओं और सरकारी नौकरियों में हिन्दू सीटों की माँग की ।

§8§ साम्प्रदायिक संगठनों की भूमिका

मुख्य साम्प्रदायिक संगठन मुस्लिम लीग § 1906 में गठित § औरहिन्दू महा सभा § 1915 में गठित § एक दूसरे के विरोधी थे । किन्तु वे सदैव एक दूसरे को औचित्य प्रदान करते हुए एक दूसरे को और भी साम्प्रदायिक बनाते रहे । वे अपनी-अपनी साम्प्रदायिकता के पक्ष में यह तर्क दिया करते थे कि वह तो दूसरों की साम्प्रदायिकता की स्वाभाविक प्रक्रिया है । अपने प्रचार एवं राजनैतिक

---

7. प्रो. विपिन चन्द्र: भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, पृ.-386

गतिविधियों द्वारा उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों को एक दूसरे के नजदीक नहीं आने दिया । एक दूसरे के प्रति अविश्वास की भावना फैलायी गई और जन साधारण में साम्प्रदायिकता का प्रसार किया गया ।

§ज§ राष्ट्रीय आन्दोलन की दुर्बलताएँ :

साम्प्रदायिक विचार धारा राष्ट्रवादी विचार धारा एवं शक्तियों के द्वारा ही पराहत की जा सकती थी । किन्तु राष्ट्रवादी विचारधारा के एक शक्ति के प्रतिनिधि के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जन साधारण में साम्प्रदायिकता को फैलाने से न रोक सकी हालांकि राष्ट्रवाद, धर्म निरपेक्षता और भारतीयों में एकता लाने के लिए कांग्रेस कटिबद्ध थी । उसने साम्प्रदायिक शक्तियों के विरूद्ध संघर्ष भी किया किन्तु वह विफल रही । इसके कई कारण थे , जैसे- कांग्रेस का साम्प्रदायिकता के स्वरूप को पूरी तरह न समझ सकता, जिसके अभाव में वह एक समग्र नीति नहीं अपना सकी । कांग्रेस की अस्थायी नीतियाँ साम्प्रदायिकता के छिपता से बदलते हुए स्वरूप से ताल मेल नहीं बिठा सकी ।

राष्ट्रीय आंदोलन में कुछ हिन्दू पुनरूत्थानवादी प्रवृतियाँ प्रवेश कर गई जिन्होंने कांग्रेस द्वारा मुसलमानों का विश्वास प्राप्त करने और उन्हें अपने साथ ले चलने के प्रयत्न

में बाधा उत्पन्न की । साथ ही राष्ट्रीय नेताओं द्वारा जाने अनजाने हिन्दू प्रतीकों जैसे गाँधी जी का राम राज्य तिलक का गणेश पूजा या फिर क्रांतिकारियों का काली माँ की मूर्ति के समक्ष कसम लेना इत्यादि, के इस्तेमाल ने भी इसमें बाधा उत्पन्न की ।

इसके अलावा कांग्रेस ने साम्प्रदायिक शक्तियों का रियायत देने का क्रम जारी रखा, जिससे साम्प्रदायिक समूहों को राजनैतिक प्रतिष्ठा मिलने लगी । अंग्रेजी सरकार विभिन्न दलों के बीच समझौता न होने देना चाहती थी । इस लिए कांग्रेस मुसलमानों को जो भी सुविधाएँ देती अंग्रेजी सरकार उससे अधिक सुविधादेती और कांग्रेस इस प्रयास में भी एक बार फिर मुसलमानों का समर्थन पाने में विफल हो जाती ।

बंगाल का विभाजन और पृथक निर्वाचन:

प्रशासनिक सुविधा के नाम पर बंगाल का विभाजन §1905§ वास्तव में बंगाल के राष्ट्रवाद को कमजोर बनाने और उसके विरूद्ध मुसलमानों को मजबूत करने की अंग्रेजी सरकार की इच्छा का परिणाम था । विभाजन की योजना और स्वदेशी आंदोलन के साथ ही सरकारी संरक्षण में 1906 के आखिर में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग का गठन हुआ ।

इस दल में आगा खां, ढाका के नबाब सोहिसिन्नुल मुल्क जैसे बड़े जमींदार, पूर्व नौकरशाह और उच्चवंशीय मुसलमान थे । इनका उद्देश्य नौ जवान मुसलमानों को कांग्रेस की ओर न जाने देने तथा राष्ट्रीय आंदोलन में उन्हें शामिल न होने देना था । मुस्लिम लीग ने सरकार के इस प्रचार को कि बंगाल विभाजन से मुसलमानों को लाभ होगा, लीग ने स्वीकार कर लिया और उसने बंगाल के विभाजन का समर्थन किया । फलत: स्वदेशी आंदोलन के दौर में पूर्वी बंगाल में कई साम्प्र - दायिक दंगे हुए जिससे अलगाववाद बढ़ा ।

1909 के मार्ले मिंटो सुधारों ने साम्प्रदायिकता के आधार पर मतदाता मंडल बनाएं और साम्प्रदायिक राजनीति को फैलने के लिए एक मजबूत आधार दिया । इस पद्धति के तहत मुस्लिम मतदाताओं के लिए अलग चुनाव क्षेत्र बने जहाँ सिर्फ मुसलमान उम्मीदवार हो सकते थे और सिर्फ मुसलमान ही मतदाता भी । " चूकि इन चुनाव क्षेत्रो में सभी मतदाता एक ही धर्म को मानने वाले थे इसलिए उम्मीदवारों को अन्य धर्मावलम्बियों की चिंता नहीं करनी होती थी । वे जमकर साम्प्रदायिक आधार पर चुनाव प्रचार करते थे । जिससे मतदाताओं को साम्प्रदायिक ढंग से सोचने और अपनी सामाजिक आर्थिक तकलीफों को साम्प्रदायिक ढंग से व्यक्त

करने का प्रशिक्षण मिलता था । विधायिकाओं, सरकारी नौकरियों, शिक्षा संस्थाओं आदि में आरक्षण का यही दुष्परिणाम हुआ[8] ।"

पृथक निर्वाचन मंडल का यह प्रभाव हुआ कि इसने ऐसी संरचनाओं को जन्म दिया जिनसे अलगाववाद को बढ़ावा मिला । इसके द्वारा साम्प्रदायिक समूहों एवं संगठनों की प्रक्रिया तेज होने लगी तथा इसने भारतीय राजनीतिक दलों के बीच किसी भी समझौते की सम्भावना समाप्त कर दी ।

लखनऊ समझौता और खिलाफत आन्दोलन:

1916 के आखिर में कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग का अधिवेशन लखनऊ में हुआ । लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और मुहम्मद अली जिन्ना के कारण एक समझौता पर हस्ताक्षर हुआ । दोनों संगठनों ने एक जैसी राजनीतिक मांग रखी थी जिसमें से एक यह मांग की कि युद्धबाद भारत को स्वशासन दिया जाय । लीग का समर्थन पाने के लिए एक स्थायी प्रबन्ध के रूप में कांग्रेस द्वारा पृथक मतदाता मंडल तथा सीटों के आरक्षण को मान्यता दी गई । कई दृष्टियों

---

8. प्रो. विपिनचन्द्र: भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, पृ. सं. -388

से यह समझौता प्रगतिशील था । किन्तु इसके द्वारा कांग्रेस ने साम्प्रदायिक राजनीति को स्वीकार भी कर लिया । समझौता में यह निहित था कि भारत विभिन्न समुदायों का देश है और उसके हित अलग-अलग है । फिर भी यह नेताओं के बीच का समझौता था न कि जनता के बीच का । जबकि कांग्रेस और लीग के समझौते को गलत रूप से हिन्दू मुस्लिम समझौतेका नाम दिया गया । इसके पीछे समझ यह थी कि लीग मुसलमानों की असली प्रतिनिधि संस्था है । किन्तु अंग्रेजी सरकार ने गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया ऐक्ट 1919 लाकर, जिसमें मुसलमानों को लखनऊ समझौते की अपेक्षा कहीं अधिक रियायतें दी गई, लखनऊ समझौते को अर्थहीन कर दिया ।

खिलाफत आंदोलन दरअसल एक ऐसे विशिष्ट राजनैतिक माहौल की उपज था जिसमें भारतीय राष्ट्रवाद और इस्लामी विश्व बन्धुत्व साथ-साथ कदम बढ़ा रहें थे । इसके कारण राष्ट्रीय आंदोलन में मुसलमानों की सहभागिता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई । किन्तु खिलाफत गठ जोड़ ने धार्मिक नेताओं को राजनीति में खींच लिया । आंदोलन वापिस लिये जाने के बाद भी राजनीति में इन धार्मिक नेताओं की सक्रियता समाप्त नहीं हुई । 1919 के मान्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारों ने साम्प्रदायिक प्रचार और इसके आधार पर राजनैतिक गति -

DISS
0,152,3,N21,6:9
152N2

विधियों को पनपने का पथ प्रशस्त किया । साथ ही रोजगार के अवसरों की कमी के माहौल में शिक्षा के विस्तार ने काफी बड़ी संख्या में शिक्षित बेरोजगार पैदा कर दिये जो कि नौकरियों के लिए धर्म के इस्तेमाल के लिए तैयार थे । ऐसी स्थिति में चौरी-चौरा काण्ड (12 फरवरी 1922) के बाद असहयोग आंदोलन के वापस लेने तथा राजनीतिक शून्यता के साथ ही साम्प्रदायिकता भारतीय राजनीति में प्रवेश करने लगी इन सब कारणों से 1922 -27 के दौरान के वर्ष बड़े दंगों के साम्प्रदायिकता के वर्ष रहें हैं ।

1923 में अमृतसर, मुलतान, मेरठ, मुरादाबाद, राय - बरेली, सहारनपुर और अन्य शहरों में हिन्दू मुस्लिम दंगे हुए 1924 में दिल्ली कोहाट, गुलबर्ग, जबलपुर नागपुर लाहौर लखनऊ और इलाहाबाद में दंगे हुए । इनमें सितम्बर में हुआ कोहाट का दंगा सबसे भयंकर था । इसमें सरकारी हिसाब के अनुसार 155 आदमी हताहत हुए थे और कितने ही घर जला दिये गए थे । इसकी भयंकरता का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि एक स्पेशल ट्रेन में भरकर चार हजार हिन्दुओं को कोहाट क्षेत्र से हटा लिया गया था । 1925 में दिल्ली कलकता, इलाहाबाद और लाहौर में बड़े दंगे हुए । सरकारी हिसाब के अनुसार अप्रैल 1926 से लेकर मार्च 1927 तक, हिन्दुस्तान में 40 बड़े दंगे हुए जिनमें 157

आदमी मारे गए और 1,598 घायल हुए । इनमें कलकत्ता का दंगा सबसे भयंकर था । इसमें सरकारी हिसाब के अनुसार 44 आदमी मारे गए थे और 584 घायल हुए थे । इतने भयंकर साम्प्रदायिक दंगे देश के इतिहास में पहले कभी न हुए थे ।[9] इस अवधि में गोहत्या और मस्जिदों के सामने संगीत के मुद्दे उभर कर आये । मुस्लिम हिन्दू एकता की पक्षधर खिलाफत समितियाँ लुप्त होने लगीं । 1922-23 में मुस्लिम लीग को पुनर्जीवित किया गया और इसने खुलकर अलगाववादी राजनीति के पक्ष में बोलना प्रारम्भ कर दिया । उधर हिन्दू महासभा जो कि अभी निष्क्रिय थी उसे ऐसा माहौल मिला कि वह भी अपने को पुनर्जीवित कर सकी । तब्लीग §प्रचार§ और तंजीम § संगठन§ जैसे आंदोलन मुसलमानों के बीच उठे जोकि हिन्दुओं के मध्य उठे शुद्धि और संगठन आंदोलनों के प्रतिक्रिया स्वरूप थे । आंशिक रूप से ये शुद्धि और संगठन आंदोलन भी केरल के मोपला विद्रोह §1921§ के दौरान हुए जबरन धर्म परिवर्तन की प्रतिक्रिया में हुए । 1925 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना हुई । इन तमाम घटनाओं ने राजनीतिक माहौल को काफ़ी प्रदूषित कर दिया ।

1922-27 की घटनाओं ने साम्प्रदायिक शक्तियों को चारों ओर फैला दिया । क्रमशः साम्प्रदायिकता एक ऐसी

---

9. आयोध्या सिंह: भारत का मुक्ति संग्राम, पृ.- 449

जन शक्ति के रूप में उभरने लगी जिसका सामना करना मुश्किल होने लगा । घटनाओं का विश्लेषण करें तो जो सूत्र हाथ लगेंगे उनमें कुछ यह होंगे कि 1935 के भारत सरकार आधिनियम के तहत प्रादेशिक स्वायतता एवं पूर्व से अधिक मताधिकार भारतीयों को मिले । पृथक निर्वाचन मंडल के तहत 1937 में चुनाव हुए । "लीग मई 1937 में युक्त प्रान्त के विधान सभा के उपचुनाव में इसलाम खतरे में है का नारा लगा चुकी थी । खुद जिन्ना ने 'अल्लाह' और 'कुरान' के नाम पर वोट देने की अपील की थी ?[10] ।" इसी प्रकार हिन्दू सम्प्रदायवादीयों ने " हिन्दुत्व खतरे में है का शोर मचाना शुरू किया। और 1940 में मुसलमानों के लिए एक अलग देश के रूप में पाकिस्तान के गठन की उठनेवाली नयी मांग ने सभी अन्य साम्प्रदायिक मांगों को अर्थहीन बना दिया । जो मांग अतत: 1947 में पूर्ण हुई ।

विभाजन की भूमिका:

विभजन सम्बन्धी संकेत 1942 के क्रिप्स प्रस्ताव में थे । फिर भी 1944 में चक्रवर्ती राजगोपाला चारी ने

---

10. प्रो. विपिन चन्द्र: भारत का स्वतंत्रा संघर्ष, पृ0 449

जो योजना प्रस्तुत की, जिसे तब नेताओं ने भले ही स्वीकार नहीं किया किन्तु इसी आधार पर अंतत: देश का विभाजन हुआ । गांधी -जिन्ना वार्ता जो इसी योजना पर आधारित थी, के कारण जिन्ना को अखिल भारतीय स्तर पर अतिरिक्त महत्त्व मिला हालांकि वार्ता विफल रही । और तब प्रतीत होने लगा कि पाकिस्तान अवश्य बनेगा । 1945 का शिमला सम्मेलन सिर्फ़ इसलिए सफल नहीं हुआ कि जिन्ना ने यह दावा प्रस्तुत किया कि समस्त मुसलमानों के नाम लीग द्वारा ही मनोनित होंगे । इस आधार पर कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना अब्दुल कलाम आजाद भी परिषद के सदस्य नहीं हो सकते थे । 1945 में ब्रिटेन में हुए चुनाव में लेबर पार्टी को भारी बहुमत मिला।यह पार्टी अपने चुनाव घोषणा पत्र के अनुसार भारत को औपनिवेसिक दर्जा देने को बचन बद्ध थी । 23 मार्च 1946 को कैबिनेट मिशन करांची पिर 24 मार्च 1946 को दिल्ली पहुँचा । इसने भारतीय समस्या पर बात-चीत शुरू की, किन्तु लीग ने पुन: मुस्लिम प्रतिनिधियों के मनोनयनके प्रश्न पर इसे अस्वीकार कर दिया । " जिन्ना ने मुसलमानों से अनुरोध किया कि वे अपनी पदवियाँ त्याग दें तथा अपनी कार्य समिति को अधिकार दिया कि वह पाकिस्तान प्राप्त करने तथा अंग्रेजों की " वर्तमान दासता"

और हिन्दुओं के 'भावी प्रभुत्व' से छुटकारा पाने के लिए तत्काल " प्रत्यक्ष कार्यवाही' का एक कार्यक्रम तैयार करें ।।।" कांग्रेस के अन्तरिम सरकार में प्रवेश को लीग ने हिन्दू राज्य का अत्याचार बताया और उससे मुक्ति पाने के लिए 16 अगस्त 1946 को प्रत्यक्ष कार्यवाही §Direct Action day § दिवस मनाने की घोषणा की । वस्तुतः लीग ने यह इसलिए किया था कि कांग्रेस दबाव में आकर पाकिस्तान की मांग स्वीकार कर ले । सर्वप्रथम प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस कलकत्ता में मनाया गया । उस समय वहाँ मुस्लिम लीग की सरकार थी। बंगाल के मुख्य मंत्री तब शहीद सुहरावर्दी थे । बंगाल में मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ बुरा व्यवहार किया । सरकार निष्क्रिय रही । इसके उपरांत नोआखाली में दंगा हुआ । केन्द्र की अस्थायी सरकार भी स्थिति पर काबू पाने में विफल रही । तब लार्ड बेवेल के मनाने पर लीग अन्तरिम सरकार में पांच सदस्यों के साथ शामिल हुई । किन्तु लीग ने सरकार के कार्यों में अवरोध डालकर पूरा असहयोग किया और साम्प्रदायिक दंगों को प्रोत्साहित किया । लीग ने 16 अगस्त 1946 को कलकत्ता में जो साम्प्रदायिक पागलपन फैलाया उसमें पांच हजार लोग मारे गए और नागरिक व्यवस्था

।।. सं. राम लखन शुक्ल: आधुनिक भारत का इतिहास
पृ0 सं0 - 633

पूरी तरह छिन्न भिन्न हो गई ..... बावेल विलाप करने लगे कि हमने जिस मस्मासुर को शक्ति प्रदान की, उस पर हमारा ही नियंत्रण नही रहा [12] ।"

इतिहास की यह बिडम्बना ही थी कि जिस साम्प्रदायिकता को ब्रिटिश शासकों ने अपनी स्थिति को दृढ बनाने के लिए भड़काया था वह उनके साम्राज्य के अंत की घड़ी को और समीप ले आई ।

लीग और कांग्रेस के नेताओं के बीच के गतिरोध को दूर करने के लिए 3-6 दिसम्बर 1946 में लंदन में एक सम्मेलन बुलाया गया जिसमें ब्रिटेन के प्रधान मंत्री एटली वायसराय वेवेल, कांग्रेस अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू एवं मुस्लिम लीग के अध्यक्ष जिन्ना ने हिस्सा लिया । यह सम्मेलन भी कांग्रेस और लीग के बीच मतभेद दूर करने में विफल रहा ।

" शुरू में ब्रिटेन की मजदूर दल की सरकार भारत छोड़ने और न छोड़ने के बीच झूलती रही थी । किन्तु 20 फरवरी 1947 को ब्रिटिश संसद में एटली ने यह घोषणा की कि ब्रिटिश सरकार ने यह निश्चय किया है कि जून 1948 तक भारतीयों के हाथ सता हस्तांतरित कर दी जाय [13] ।"

---

12. प्रो. बिपिन चन्द्र: भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, पृ. 454
13. डा. गांधी जी राय: राष्ट्रीय आंदोलन और भारतीय संविधान , पृ0 - 117

24 मार्च 1947 को लार्ड माउंट बेटन ने गर्वनर जनरल का पद ग्रहण किया । भारत आते ही उन्होंने विभिन्न नेताओं से विचार विमर्श करना शुरू किया । 31 मार्च 1947 को हुई गर्वनर जनरल के साथ अपनी प्रथम मुलाकात में गाँधी जी ने यह सुझाव दिया कि अन्तरिम सरकार पूर्ण रूप से लीग के नेता जिन्ना के हाथों सौंप दी जाए जिससे भारत में साम्प्रदायिक दंगों को रोका जा सके । पुन: 2 अप्रैल 1947 को गांधी जी ने ऐसा ही प्रस्ताव रखा जिसे कुछ हदतक माउट-बेटन मंजूर कर चुके थे । किन्तु इस सुझाव का जबरदस्त विरोध नेहरू और पटेल दोनों ने किया और गांधी जी को इसे वापस लेने के लिए बाध्य कर दिया ।

लार्ड माउंट बेटन कांग्रेस और लीग के नेताओं से मिलने के बाद लंदन गये । वहाँ सरकार के समक्ष देश विभाजन की योजना रखी 3 जून 1947 को लीग और कांग्रेस से परामर्श ले ब्रिटेन सरकार ने देश विभाजन की योजना प्रकाशित कर दी ।

14 जून 1947 को कांग्रेस महा समिति की बैठक में गोविन्द वल्लभ पंत ने देश विभाजन की माउंट बेटन योजना को स्वीकृति के लिए रखा । योजना विरोध और समर्थन के बीच पास हो गई ।

" 4 जुलाई 1947 को ब्रिटिश संसद में भारतीय स्वाधीनता विधेयक पेश गया । 15 जुलाई को वह बिना संशोधन के हाउस ऑफ कामंस द्वारा और 16 जुलाई को हाउस आफ लार्डस द्वारा पास कर दिया गया । 18 जुलाई को उस पर ब्रिटिश सम्राट के हस्ताक्षर हो गए । इसके अनुसार देश को दो डोमिनियनों - भारत और पकिस्तान में बाँट दिया जायेगा ? [14] ।" फलत: 14 अगस्त को पाकिस्तान अधिराज्य और 15 अगस्त को भारतीय अधिराज्य की स्थापना हुयी ।

बँटवारा एवं साम्प्रदायिक दंगे :

बँटवारे से पूर्व न तो दंगो की कल्पना की गई थी और न बड़ी संख्या में लोगों के स्थानांतरण की योजना बनायी गई थी । माना यह जाता था कि जब पाकिस्तान की मांग मंजूर कर ली जायेगी तो फिर लड़ने के लिए क्या रह जायेगा ? किन्तु विभाजन से पूर्व जितनी स्थिति भयंकर थी, विभाजन के बाद उससे कहीं ज्यादा भयंकर हो गई । हालांकि दिल्ली, करांची सब जगह जश्न मनाया गया । किन्तु

---

14. सं. रामलखन शुक्ल: आधुनिक भारत का इतिहास - पृष्ट सं0 638

यह खुशी क्षणिक थी । अड़तालीस घंटे भी न बीते थे कि पूर्वी पंजाब, पश्चिमी पंजाब तथा बंगाल से भयंकर साम्प्र - दायिक दंगो की खबरें आने लगी । फिर दिल्ली करांची कोई भी नगर इस आग से अछूता नहीं रह सका । सेना के विभाजन का परिणाम यह हुआ कि इसमें खुद सम्प्रदायिकता घुस आयी । सैनिक दंगों को शांत करने के बजाय स्वयं उसमें शरीक हो गए ।

" इन साम्प्रदायिक दंगों और हंगामों में पाकिस्तान और भारत दोनों में कितने आदमी मारे गए, कितने शरणार्थी बनाए गए कितनी युवतियों का अपहरण किया गया और उन्हें नीलाम किया गया, उसका सही हिसाब देना किसी के लिए सम्भव नहीं । नेहरू के घनिष्ठ मित्र और उनकी जीवनी के अंग्रेज लेखक ले बार्ड मोसले के अनुसार सिर्फ पंजाब में ऐसी घटननओं का हिसाब निम्नलिखित था 6,00,000 मारे गए । 1,40,- 000 शरणार्थी बना दिए गए । दोनों पक्षों द्वारा 1,00,00 युवतियों का अपहरण किया गया बलपूर्वक उनका धर्म परिवर्तन किया गया या उन्हें नीलाम कर दिया गया [15] ।" पंजाब और बंगाल दो स्थानों पर ऐसी घटनाएँ कई दिनों तक चलती रह गें । जिसने अंतत: लोगों को शरणार्थी बनने के लिए विवश कर दिया ।

विभाजन और हिंसा से प्रभावित पूर्वी बंगाल से लोग पलायन कर बिहार के पूर्णिया जिले मे शरणार्थी बने है ।जुलूस" उपन्यास की रचना इन्हीं के जीवन का आधार बनाकर फणीश्वर नाथ रेणु ने किया है ।

---

15. अयोध्या सिंह: भारत का मुक्ति संग्राम, पृ. 782

द्वितीय अध्याय

"जुलूस" में शरणार्थियों का सामाजिक जीवन

" जुलूस " में शरणार्थियों का सामाजिक जीवन

एक से अधिक मनुष्य जब एक साथ रहते हैं तो उनके मध्य पारस्परिक सम्बन्ध होते है । " मनुष्य जब साथा - साथ रहते हैं तो साहचर्य की यह प्रक्रिया उनके मध्य पार - स्परिक सहयोग सामंजस्य, अभियोजन, प्रतिस्पर्धा, वैमनस्य और संघर्ष आदि को जन्म देती है [1] ।"

चूकि मनुष्य एक क्रियाशील प्राणी है अतएव सामाजिक जीवन के मध्य वह अनेक क्रियाओं में संलग्न रहता है । एक मनुष्य की क्रिया दूसरे मनुष्यों की क्रियाओं को या तो प्रभावित करती है या फिर उनसे प्रभावित होती है । इसी को हम अन्तर्क्रिया कहते है और इन्हीं अन्तर्क्रियाओं के बीच गुजरता हुआ मनुष्य का जीवन सामाजिक जीवन कहलाता है । इन्हीं अन्तर्क्रियाओं में निहित- निर्दिष्ट मूल्यों के अनुसार मनुष्य सामाजिक जीवन जीने के लिए कभी वह बाध्य है तो कभी वह दूसरी दिशा में भी कदम बढ़ाता है । किन्तु फिर भी वह लोग क्या कहेंगे के सामाजिक भय एवं दबाव में ज्यादातर उसी निर्धारित जीवन को बसर करता है । जबकि इन रूढ़ स्थापनाओं को बहुत बार एक समर्थ व्यक्ति तोड़कर समाज एवं सामाजिक जीवन में नये मूल्यों का भी निर्माण

---

1. समाजशास्त्र एक परिचय:सत्यमित्र दूबे एवं दिनेश शर्मा- पृ0 - 93

करते है या फिर उसका परिष्कार करते है ।

आलोच्य उपन्यास "जुलूस" में शरणार्थियों का सामाजिक जीवन भी बहुत कुछ सीधी रेखा पर चलने वाला निर्दिष्ट सा है । फिर भी, जुलूस में शरणार्थियों के सामाजिक जीवन से सम्बद्ध सामाजिक कुरीतियाँ, सामाजिक अलगाव एवं सामाजिक समायोजन की प्रवृत्तियाँ वर्तमान हैं, जिसके कारण शरणार्थियों के सामाजिक जीवन में गतिशीलता के गुण मौजूद हैं ।

§क§ सामाजिक कुरीतियाँ:

" जुलूस में वर्णित गोड़ियर गांव के पास जो कालोनी बसायी गई है, उस "नवीन नगर कॉलोनी के सैकड़े पचहत्तर निवासी एक ही जिला और गांव के रहने वाले हैं । पवित्रा को छोड़कर सभी पिछड़ी जाति के लोग है । सतगोप कौंदू नम: शूद्र और कैवर्त [2] ।" और ये सबलोग एक ही जिला मैमन सिंह के गाँव जुमापुर के हैं । फिर भी, गोड़ियर गांव के मूल निवासियों और नये-नये बसे नबी नगर कालोनी के शरणार्थियों के सामाजिक जीवन में सामाजिक कुरीतियाँ जैसे जातिगत स्तरीकरण, अशिक्षा, अन्ध विश्वास कमो वेश बराबर है । शरणार्थीबस्ती में भी हर तरह के मुखौटे डाले खल-

---

2. जुलूस: पृ0 - 53

कुटिल-सज्जन लोग हैं । इसी बात को तालेवर गोढ़ी द्वारा पूछे जाने पर कि बस्तीके लोगों से तुमने दोस्ती की कि नहीं उसका लठैत जयराम सिंह यह कहता है कि " पाकिस्तानी हो या हिन्दुस्तानी आदमी हर किस्म के होते है और सभी जगह होते है [3] ।"

चौदह वर्षों तक विभिन्न कैम्पों में सुख-दुख में साथ - साथ रहने वाले शरणार्थियों के बीच भी जातिगत विभेद लग - भग वैसे ही है, जैसे कि वहाँ के मूलवासी गोड्डियर गांव के लोगों के बीच है । क्योंकि बिश्टू के साथ सन्ध्या के परिणय सम्बन्ध में अवरोध इसलिए तो है ही कि बिश्टू सन्ध्या को चाहता है । किन्तु वह 'बूड़ी' बिश्टू की ओर कभी पलक उठा कर ही नहीं देखती । मगर इस मार्ग में महाबाधा जाति-पांति के भेद की ही है क्योंकि - " सन्ध्या की माँ सतगोपहै बिश्टू कैवर्त । कैवत से शादी कैसे हो भला ? [4] ।"
जातिगत स्तरीकरण की इस सामाजिक कुरीति की व्यथा को व्यक्तिगत स्तर पर कारे मंडल और रब्बी पासमान तब अनुभव

---

3. जुलूस: पृष्ट: 19
4. जुलूस: पृष्ट: 115

करते है जब वे बंगाला कीर्तन में सम्मिलित होने हेतु कॉलोनी में प्रवेश का प्रयत्न करते है । कॉलोनी का कीर्तन- से केटरी काला चाँद घोष जब उन्हें फटकार देता है तो व्यथित पालवेत वापस लौटते है । और एकमित्र अन्य से यह कहता है कि " पालवेत, इनलोगों में भी ऊँच जाति और नीच जाति का विचार है । जयराम सिंघ और सुक्की बेलाही के बाबू लोगों की ही पैठ यहाँ हो सकती है [5] ।"

अशिक्षा के कारण ■ अंध विश्वास शरणार्थियों के जीवन में भी मूल निवासियों की ही भांति है । सन्ध्या की माँ गिरिबाला देवी जब पवित्रा को नींद में मोतिया के नाम लेने और आमि नाचबो की बात अपनी पुत्री सन्ध्या से सुनती है तो उसके मुख से सहज ही यह बात बाहर आती है कि - " उई ताले काका निश्चय कोनो मन्तर.....[6]।" गिरिबाला देवी की समझ से यह स्वप्न में बड़बड़ाना नहीं बल्कि ताले काका के मन्त्र का प्रभाव है जिसके कारण पवित्रा नींद में बोलती है । इसी प्रकार अचानक आये ओला भरी वर्षा क्या बंगाली और क्या बिहारी दोनों के लिए प्राकृतिक घटना नहीं है बल्कि रीति छोड़ "अनरीत" करने का फल है ।

---

5. जुलूस: पृष्ट - 71
6. जुलूस: पृष्ट - 125

एक ओर सुक्की बेलाही के लोगों का मानना है कि हरिबाबू के कारण ही यह प्रलय हुआ क्योंकि उन्होंने रोज शंख फूंककर पूजा करने वाली बंगालिन कुमारी कन्या से विवाह किया है । इसीलिए कलकत्ता वाली काली भैया ने क्रोध किया है । तो दूसरी ओर गोडिअर गांव के लोगों का मानना है कि " तालेवर ओढ़ी कंठी तोड़कर मांस मछली खाने लगा है । .... तालेवर का अपनी बड़ी पतोहू के साथ 'लाट-लाट' है तालेवर गोढ़ी तीरथ करने गया तो साथ में दो औरतों को ले गया .....दीपा की माँ रामजय के साथ लट पटा गयी है । अब तो सिन्दूर भी पहने लगी है दीपा की माँ [7]

दोनों ग्रामों के वासी प्राचीन अन्ध विश्वासों से बंधे हुए काठ के पुतले है । जयराम सिंह सोचता है कि मंत्री की महिमा न होती तो बाँध उद्घाटन के समय काशी और पटना के पण्डित कलश सजाकर आरती क्यों उतारते ? अररिया कोट की सभा में मंत्री जी लाल मूंगो वाले गोल चपटे चौड़े ताबीज लटका कर क्यों आते " अवश्य मंत्रों के बल से ही मंत्री जी हुए है [8] ।"

---

7. जुलूस: पृष्ट - 151
8. जुलूस: पृष्ट - 41

गोड़ियर गाँव के निवासियों एवं नवीनगर कालोनी के बंगाली शरणार्थियों दोनों को समान भाव से ज्योतिष विद्या में असीम विश्वास है । कामदेव चौधरी पवित्रा को इस विद्या में निष्णात मानता है उसका कहना है कि - " फारबिसगंज और कस्बा से लोग आकर दिन उचरवाते है बंगाली, बिहारी मारवाड़ी सभी । पाँच-पांच देश के पत्रे है उसके पास बंगला का नदिया शान्ति पुरी, बिहार का तिहुता, और काशी की पाँजी सब है उसके पास [9] ।"

पवित्रा भी है कि कभी वह कामदेव के लिए व्यापार हेतु दिन उचारती है तो कभी तालेवर गोढ़ी के यात्रा के लिए सन्ध्या से फूल का नाम पूछ कर शुद्ध दिन बताती है या फिर कभी काली मंदिर के निर्माण के लिए नींव डालने का दिन उचारती है । उधर पण्डित रामचन्द्र चौधरी न ज्योतिष है और न उन्हें पाँजी पत्रा से विशेष सम्पर्क रहता है । फिर भी तालेवर गोढ़ी उसे मुफ्त का पुरोहित बनाए हुए है । वे भी जयराम सिंह से कहते है कि काली मंदिर की नींव काली पूजा के समय क्यों नहीं डालने को कहते तालेवर से ? .....

---

9. जुलूस: - 48

शिक्षा के अभाव में लोग या तो बातों को तह-ही रूप में समझ नहीं पाते या फिर उसका कोई भ्रामक अर्थ निकालते है । इस कारण वे या तो अन्धानुकरण करते है या फिर समझाने पर सही बात को वाजिब बात कह कर स्वीकार कर लेते है ।

डा० रेणु शाह इस संदर्भ में यह राय है कि जुलूस में नबीनगर के लोग हर बात में अपने देश को ही याद करते है । अशिक्षा के वजह से ही उनके दिमाग में यह बात नहीं आती कि देश का माने हिन्दुस्तान कैसे हो सकता है, देश का माने तो जहाँ वे रहते थे, जुमापुर को ही देश मानते है । उसकी याद कर दुखी होते है । इसी प्रकार उपपुनर्वास मंत्री द्वारा नबी नगर के उद्घाटन की घटना है । जब गांव के लोग उनके द्वारा पढ़े गये शेर का अर्थ नहीं समझते किन्तु जब अन्य लोग तालियाँ बजाते है तो कुछ देर बाद देखा-देखी वे भी तालियाँ बजाते है ।

काम अनैतिकता की प्रवृति "जुलूस" में व्यापक रूप से व्याप्त है । पवित्रा को हर जगह कामुक और शैतान व्यक्तियों का जुलूस सा नजर आता है । ..." और हर जगह पवित्रा को एक जोड़ी आखें घूरती रहती है । उन आंखो से कासिम झांककर कहता यहाँ है मेरा चाँद । पवित्रा सुनती कासिम कह रहा है तुम जो कहोगी करने को तैयार हूँ ।

आग में कूदने को कहो पानी में डूबने को कहो । .... पवित्रा हुक्म देती - चावल, दूध, बिस्कुट, दवा कपड़े जल्दी भेजो ! कैम्प सुपरवाइजर की बदली करो । .... रिलीफ क्लर्क को बरखास्त करो । ..... कासिम कहता जो हुक्म । जैसी मर्जी । ...लेकिन मेरी अर्जी ? यानी कम से कम एक बोसा भी नहीं [10] ।" चौतरफा इन कामुक आंखों की गीध दृष्टि से घिरी, अनुभव की पीड़ा को सहती हुयी पवित्रा, शरणार्थियों के कल्याण के निमित्त अफसरों, पी० ए०, क्लर्कों के नाना रूपधारी इन तिकृत व्यक्तियों से कार्य भी साधती है । किन्तु बेतिया कैम्प के इन्स्पेक्टर की आँखो से झांकता हुआ कासिम जब अधीर हो उठा तो मजबूरी में जुमापुर के दर्जन भर शरणार्थियों ने मिलकर इन्स्पेक्टर का सिर मूड दिया और मुँहपर कालिख पोतकर कैम्प से बाहर कर दिया था पूरे समारोह के साथ । फिर भी पवित्रा के प्रति लपलपाती आँखों वाले कर्मचारियों के कारण ही पवित्रा के बहुत से कार्य आसान हो जाते हैं । जुमापुर के शरणार्थियों को पवित्रा के मनोनुकूल ऐसे स्थान पर बसाया जाता है, जहाँ वे मक्की भात पेट भर खा सकते हैं और धान तथा पाट के खेती कर सकते है ।

---

11. जुलूस: पृष्ट - 94

यही क्या ? ट्यूब वेल का फिटर या जयराम सिंह सभी पवित्रा के इर्द गिर्द भंवरों की भांति मांडरे देते है । जयराम सिंह तो सामूहिक भोज के अवसर पर " आज पवित्रा की देह का स्पर्श करीब पन्द्रह बार किया और प्रत्येक बार उसकी देह धन्य- धन्य हो गयी ।। ।" और उधर बेहूला बाला लखिन्दर के बराती जब नाचते कूदते कालोनी में आये तो " उस भीड़ में शोभना को एक लड़के ने पकड़ कर 'चुम्' ला लिया [12] ।"

यह वास्तविकता है कि अतिकाम भावना से शरणार्थी समुदाय से इतर के ज्यादातर पुरूष वर्ग के लोग है जो काम भावग्रस्त है । सरस्वती एक अपवाद है । फिर भी इस निकृष्ट काम-भावना का उदात्तीकरण भी हुआ है । यथा, तालेवर गोदी भैरवी के रूप में पवित्रा का भोग करने के लिए योजना बनाता है और उसे जाल में फंसाने के लिए जयराम सिंह को नियुक्त करता है । जय राम सिंह पवित्रा के मुख से " मैं आपकी छोटी बहन हूँ' ये शब्द सुनकर गद-गद हो उठता है । इसी प्रकार पिता के प्यार से भी वंचित की गयी पवित्रा को तालेवर की आंखो में पिता दीखे और उसके मुख से सहज भाव

---

12. जुलूस: पृष्ट - 99

से निकल गया - " ताले काका" पुत्री हीन तालेवर का गला यह सम्बोधन सुनकर भर आया । पवित्रा को प्रथमत: देखते ही पण्डित रामचन्द्र चौधरी ने अनुभव किया कि " वह सचमुच देवी है । उसमें भगवती का अंश जरूर-से-जरूर है [13] ।"

फिर भी, इस वातावरण में भी मानवीयता के सहज सम्बन्धों के भी दर्शन यदा कदा ही सही होते जरूर हैं ।

किन्तु, अन्तत: ये कुरीतियाँ शरणार्थियों एवं गोड्डियर गांव के मूल निवासियों के बीच विभेद पैदा करती है जिसका प्रतिफल सामाजिक अलगाव का स्पष्ट उभार है, जो एक दूसरे को एक दूसरे से दूर धकेलता है ।

---

13. जुलूस: - पृष्ठ - 105

§ख§ सामाजिक अलगाव:

गोड्डियर गंज एवं गोड्डियर गांव की शरणार्थी बस्ती नबी नगर के दोनों समुदायों के लोग पहले- पहल परस्पर खूब टकराते हैं । न तो मूल निवासी ही शरणार्थियों को स्वीकार कर पाते हैं और न ही उखड़े हुए शरणार्थी लोग मूल निवासियों पर विश्वास कर पाते है । पूर्वी बंगाल से पलायन कर आये हिन्दू शरणार्थियों के मन मस्तिष्क में मुस्लिम विद्वेष सहज ही प्रवेश कर गया है । नबी नगर का नामकरण बिहार के पुनर्वास उपमंत्री मुहम्मद इस्माइल नबी के नाम पर हुआ है । परन्तु शरणार्थी उसे नवीननगर ही समझते है । शायद यही वजह है कि वे इस नामकरण का विरोध नहीं करते नही तो एक मुसलमान द्वारा किया गया अपने गांव का शिलान्यास और मुसलमान के नाम पर अपने गांव का नाम - करण उन्हें अवश्य अस्वीकार होता । क्योंकि कॉलोनी के स्कूल में जब ब्लाक की ओर से एक मुसलमान हेडमास्टर को भेजा गया तो गोपाल पाइन ने स्कूल के बरामदे पर लेटकर अनशन आरम्भ कर दिया -

" हेडमास्टर साहब वापस चले गये । क्योंकि एक डेढ़ घंटे के अनशन से ही सारी कोलोनी में सनसनी फैल गयी । सभी

की आँखों में लाल डोरे उतर आये [14] ।"

ऐसे ही जब डाकिये द्वारा कालोनी के पत्रों पर अपनी सुविधा के लिए कैथी लिपि में " पाकिस्तानी टोला " लिख देने पर गोपाल पाइन भड़क उठता है । वह डाकिये से सवाल करता हैं - " आपही लोग माने सरकारी कर्मचारी होकर ऐसा कीजिएगा तो यह राज कैसे चलेगा ? ऐं ? बोलिए ? यहाँ मिनिस्टर साहब आये थे । आपको मालूम है? गांव का क्या नाम हुआ यह भी मालूम है ? तख्ती लटका था, यह भी मालूम है .. [15] ।" और जब गोपाल पाइन उस सरकारी चिट्ठी को पढ़ता है जिसमें "पाकिस्तानी टोला" में स्कूल खोलने का प्रस्ताव है, तो वह बेहद हताश होता है तथा उसका गला भर आता है । फिर वह पत्र अधूरा छोड़ देता है । तब उसे लगता है कि सचमुच "पाकिस्तानी टोला" नाम अब नही मिटने वाला है तो उसका गुस्सा गोड़ियर गांव के उपर फूट पड़ता है । उसके मुख से निकलता है " गोड़ियर... गोड़ियर..... चूहे में जाये यह गोड़ियर गांव" ।

और भी जब जयराम सिंह बातचीत में शरणार्थी बस्ती नबी नगर के लिए पाकिस्तानी टोला शब्द का इस्तेमाल करता है, तो गोपाल पाइन उसे टोकता है । जयरामसिंह

---

14. जुलूस: पृष्ट - 132

15. जुलूस:पृष्ट - 8

को सावधान करते हुए वह कहता है :--

" ऐ सिंघ जी ! पाकिस्तानी टोला मत बोलिए । इस गांव का नाम नोबीन नगर है । जान लीजिए नही जानते थे तो ! .....अगाड़ी से नवीन नगर ही बोलिए [16] ।"

जिस कारण से शरणार्थियों को घर से बेघर होना पड़ा, उसकी चर्चा होते ही स्वाभाविक रूप से क्षोभ फूट पड़ता है । गोपाल पाइन शरणार्थी बस्ती नबी नगर को पाकिस्तानी टोला" कहे जाने का विरोध बार-बार इसी लिए करता है । उसका कहना है कि डाकघर मे चिट्ठी सरकारी पैसा सब कुछ नोबीन नगर के नाम से आयेगा और लोग पाकिस्तानी टोला कहेगें ? जब उसको पवित्रा समझाती है कि हमलोग का देश पाकिस्तान में पड़ गया हमलोग पाकिस्तानी से भागे है । इसी-लिए लोग 'पाकिस्तानी टोला' नबीन नगर को कहते है । तब पुनः चिढ़ कर गोपाल पाइन प्रति प्रश्न करता है । इसलिए हमलोग मोसलमान हो गए हमलोगों का देश ही पाकिस्तान में गया । हमलोग तो हिन्दुस्तान में आ गये । इसलिए गोपाल पाइन की सहज बुद्धि के अनुसार उन्हें पाकिस्तानी नहीं कहा जाना चाहिए। किन्तु सरकारी कर्मचारी और गांव के लोग है कि उन्हें पाकिस्तानी ही कहते है । इसलिए गोपाल पाइन

---

16. जुलूस: पृष्ट - 28

ही नहीं समस्त शरणार्थी समाज अपने को सरकारी कर्मचारियों एवं गोडियार गांव के लोगों से बराबर एक दूरी पर होने का अनुभव करते है ।

और यह अस्वाभाविक नहीं कि लोग उन्हें उनकी औरतों को घृणा एवं क्षुद्र दृष्टि से देखें और शरणार्थी उनसे घृणा न करें । विशेष रूप से सरकारी कर्मचारी अफसर अधिकारी लोग । तो उनकी चिट् व्यक्ति विशेष से पसर कर पूरे आस-पास के समाज के लोगों को अपने लपेट में ले लेती है ।

हरिधन प्रोडल को ट्यूबेल गड़वाने वाले " खुदे मानिब" ७ क्षुद्र अधिकारी § से इसलिए चिढ़ है कि ट्यूबेल फिटर साहब की दृष्टि आरम्भ से अंत तक पवित्रा पर ही गड़ी हुयी थी क्योंकि 'भाइयों छापला' देखते ही 'खुदे मानिबो' की जीभ सुड़सुड़ाती रहती है । छिदाम दास का गुस्सा भी इन खुदे मानिबों के लिए ही है । जब वह कहता है कि - " देखा ! फिटर साहेब को ओवर्सियर बाबू कह देने से कितना खुश हुआ ? रसाला .....[17] " सभी जी खोलकर हँस पड़े मानों छिदाम दास ने सबके मन की बात कह दी हो ।

शरणार्थियों का हिन्दुस्तानी भाषा सीखने से इसलिए भी

---

17. जुलूस: पृष्ट - 3

परहेज है कि लोग उन्हें पराया समझते है और वे लोगों को । गोपाल पाहन की घरवाली का कहना है कि ..." सब गेलो !.....सब गेलो ! सब गया, अब । देश गया गांव जाति धर्म बाकी था सो यहाँ अब ....समझो गया ! ... सुनती हो बंगला नहीं सभी के बच्चों को हिन्दुस्तानी भाषा पढ़ना होगा [18] ।

गोड़ियर गांव के सबसे धनाढ्य व्यक्ति तालेवर गोढ़ी द्वारा दिये गए भोज की बात सुनकर शारदा बर्मन को अच्छा नहीं लगता । उसकी राय में बिहारियों के साथ खिलान-पिलान और मिलान की बात ठीक नहीं है । खुद खुदो बाबू को इस बात का गर्व है कि उनका परिवार तीन चार पीढ़ियों से पूर्णिया में रहते हुए भी खुदो बाबू से खुदो प्रसाद या खुदो वर्मा नहीं बना । यही क्या पवित्रा के बिहारियों के साथ समन्वय सम्बन्धी बयान का विरोध करते हुए शरणार्थी यह तर्क देते है कि - " मुश्किल दीदी ठाकरून
....पर छाद टाइटेल अपने गांव के किसी आदमी के नाम से लगा दो, देखोगी फिट ही नहीं करेगा [19] ।"

तब उपन्यास और शरणार्थी समूह की नायिका पवित्रा को यह तब देखकर बहुत तकलीफ़ होती है । क्योंकि उसे यह

---

18. जुलूस: पृष्ट - 99

19. जुलूस: पृष्ट - ।

भी पता है कि उसकी अनुपस्थिति में लोग यहाँ की मरी हुयी मिट्टी और सूरज चांद तक को गाली देते हैं । अत: वह इस सोच में पड़ जाती है कि गांव के लोगों को यहाँ की मिट्टी से मोह क्यों नहीं हो रहा ।

सामाजिक अलगाव का अन्य रूप गोड़ियर गांव के मूल निवासियों में मौजूद प्रान्तीयता के प्रभेद का भी है । मूल निवासियों का शरणार्थियो पर तनिक भी विश्वास नहीं है । उन्हें लगता है कि शरणार्थियों के आने से गांव की स्वाभाविक जीवन यात्रा, शांन्ति परम्परा अवश्य विघ्न - कारी होगा । कामचोर है सब, पैसन देखा है । जनानी भी खड़ाऊ पहन कर चलेगी, धरती पर पैर नहीं देगी आदि शब्दों में आगन्तुक समाज की धज्जियाँ उड़ाने की कोशिश ही दिखाई पड़ती है । एक ओर शरणार्थी यहाँ के जन जीवन में घुल-मिल नहीं सकने के कारण क्षुब्ध हैं , तो दूसरी ओर जन जीवन में बाहरी घुसपैठ को गांव के मूल निवासी भी सीधी तरह स्वीकार नही करना चाहते । इस विरोध को रेणु ने बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित किया है [20] ।"

---

20. विपक्ष: भरतयायावर: 227 पृ0

अत: केवल दोष बंगाली शरणार्थियों पर ही नहीं जाता वरन् बिहारियों में व्याप्त प्रान्तीय भावना भी दो समुदायों के सामाजिक विलगाव का एक कारण है । गोड़ियर गांव के आदि निवासी लोग नवीन नगर को पाकिस्तानी टोला कहते है । उन्हें सदैव संदेह की दृष्टि से देखते हैं । गांव के मालिक तालेवर गोदी का कहना है कि पाकिस्तानियों बसेगा ? बसना होता तो जहाँ बसे थे वहाँ से भागते ही क्यों ? तालेवर गोदी का लठैत जयराम सिंह का शरणार्थियों के बारे में कहना है "कि ई बंगालियाँ बस देखते में सिधोलिया लगते है लेकिन भीतर से बड़ा 'मारखू' होते है । रातो रात सिमेन्ट लोहा लक्कड़ बेचकर गांव के गांव - परेट (अर्थात् भाग गये . सिरुआ में, महिचन्दा में - सब जगह कोलनी का यही हाल हुआ [21] ।"

ईर्ष्या भाव से भी गोड़ियर गांव के लोग शरणार्थियों चिढ़ते है जिस कारण दोनों समुदायों मे दूरी बनती जाती है । मोहन दफादार को दुख है कि गांव के लोग दस साल से स्कूल की मांग कर रहे हैं । किन्तु स्कूल के नाम पर एक चटसार भी नहीं खुला । किन्तु पाकिस्तानियाँ सब के आये छ: महीने भी नहीं हुआ कि मिडल स्कूल खोलने का ऑडर

---

21. जुलूस: पृष्ट सं0 - 16

आ गया । इसी प्रकार पण्डित रामचन्द्र चौधरी कहते है कि यदि स्कूल का पैसा खाकर बंगालिया सब नही भागे तो मेरा नाम रामचन्द्र चौधरी नहीं कुकुर चन्द्र चौधरी कहना जितने निठल्ले और कामचोर लोग थे, सबरिपूजी हो गये है । मूल निवासियों का ईर्ष्या भाव इस बात में भी आगत लोगों के प्रति देखा जा सकता है कि मंत्री द्वारा किये गये शिलान्यास एवं गांव के नाम गाड़ी गयी तख्ती एक सप्ताह भी नहीं टिक सकी । क्योंकि अमीर किसानों के चरवाहों ने तख्ती को उखाड़ फेंका । यही क्या तख्ती टांगने के लोहे के हुँक को भैस की डोरी में डालकर उसी राह से रोज गुज़रते हैं । और शरणार्थियों में शक्ति नही कि वे उन्हें रोक-टोक सकें । ऐसे ही जब उन्हें बंगालिया कहते है तो वे बुरा नहीं मानते, कुछ सीमा तक । किन्तु जब उनकी औरतों को बंगलिनियाँ कहते है, तो उन्हें कष्ट होता है । गोपालपाइन को इस बात का दुख है कि लोग टोकने पर, समझाने पर उलटे मुँह बनाकर जबाब देगें - " अरे तोरी । बंगलिनियाँ को बंगलिनियाँ नही कहें तो और क्या बोलेंसंथलिनियाँ[22] ।"

---

22. जुलूस: पृष्ट - 34

गोड्डियर गांव के लोगों का शरणार्थियों के प्रति यह अनावश्यक आक्रोश अतत: सामाजिक अलगाव के सृजन में सहायक होता है ।

यही क्या गोड्डियर गांव के लोग स्वयं तो शरणार्थियो को बंगाली-कंगाली कहते ही है, उनके बच्चे भी बंगालियों को चिढ़ाने में उनसे पीछे नहीं है । बच्चे बंगालियों को खिझाने के लिए कहते है - " दाल पकाया, भात पकाया पर-वल की तरकारी। मीन मारकर भोग लगावे अधम जात बंगाली[23]।" निस्सदेह बच्चों को बड़ों द्वारा ही यह दोहा सिखाया गया होगा । तब बंगाली लड़के भी खीझ कर जवाब में उन्हें 'असब्बो' 'जंगली' 'खोट्टा' इत्यादि शब्द का प्रयोग कर शीतलता का अनुभव करते है । बंगालियों की मांस भक्षण की प्रवृत्ति की भी बिहारी निंदा करते है । वे उन पर कटाक्ष करते हुए कहते है कि बंगाल में तो वैष्णव भी मछली को 'जल-तरोई' कहते है और मछली भक्षण को मांसाहार नही मानते । वहां तो कहा-वत ही है कि - 'माँगुर माछ खा बेटा, हरि हरि बोल'। इस प्रकार सामाजिक विषमता की स्थिति और सान्द्र हो जाती है ।

व्यक्तिगत स्वार्थ और प्रतिस्पर्धा के वजह से भी जहां बंगाली शरणार्थियों के बीच ही अलगाव है, वही बिहारी

---

23. जुलूस: पृष्ट - 18

भी बंगालियों के उपर स्वयं के स्वार्थवश उल्टा-पुल्टा आरोप लगाते है । बंगाली शरणार्थी योगेश दास को इसलिए स्वीकार नही कर पाते है कि वह बारिसाल का शरणार्थी है । वे बराबर उसके साथ बाहरी व्यक्ति सदृश्य व्यवहार करते है । इस बात को पवित्रा समझती है । इस - लिए वह जब हरिप्रसाद यादव के साथ अपनी पुत्री की शादी करने के लिए तैयार होता है और स्वयं भी यादव के साथ जाने को तैयार हो जाता है, तो पवित्रा उसे नहीं रोकती बल्कि योगेश को रोकने वाले तालेवर गोष्ठी को समझाती है - " ताले काका ! योगेश का चले जाना ही अच्छा है । एक तो शुरू से ही इस कॉलोनी के लोग बारिसाल का आदमी कह कर परायेपन का बरताव करते थे उससे । इधर जब से शादी की बात तय हुई है कोई इनसे बात ही नही करता [24]।"

बंगाली शरणार्थियों को मांसाहारी वैष्णव तो लोग मानते ही है व्यक्ति गत स्वार्थ स्पर्धा और ईर्ष्या के कारण ही चौधरी का दुकान दार बेटा फेरीवाले अन्दु को सम्बोधित करते हुए कहता है कि - " सभी को भागते समय गोमास खिलाया गया है पाकिस्तान में । और एक बार जो चख लिया

---

24. जुलूस: पृष्ठ - 142

है तो वह खाये बगैर रहेगा ?" ऐसा आरोप चौधरी का दूकानदार बेटा इसलिए लगाता है कि लोग फेरी वाले बंगालियों से बिस्कूट इत्यादि न खरीद कर चौधरी के दूकान से ही जो कुछ सड़ा गला सामान है खरीदें ।

शरणार्थी और मूलवासियों के बीच विषमता कहें या ऐसा-ऐसी का एक और कारण नेतृत्व हड़पने की आकांक्षा भी है । सरस्वती देवी गोड़ियार गांव की पढ़ी लिखी दो औरतों में से एक है । दूसरी औरत है, पारस प्रसाद की पत्नी महामाया प्रसाद । सरस्वती को लगता है कि गांव में उसके रहते हुए एक बंगालिन औरत लीडर बनकर मीटिंग के लिएपूर्णिया जाती है, यह बिहारियों के लिए लज्जा जनक है । किन्तु उसे यह नहीं ज्ञात है कि पवित्रा कॉलोनी कमिटि की बैठक के लिए पूर्णिया जाती है और सरस्वती कॉलोनी से सम्बद्ध नहीं है इसलिए वह पवित्रा के स्थान पर पूर्णिया नही जा सकती । पवित्रा को देवी और दुर्गा कहने वाले अपने नौकर कारे मण्डल से ईर्ष्या के कारण ही सरस्वती बेहद नाराजगी रहती है ।

कभी कभी तो स्वार्थ वश लोग स्त्री पुरूष के भेद को भी बढ़ावा देने लगते है । इसी भेद को आधार बनाकर शारदा वर्मन पवित्रा के खिलाफ लोगों कोखड़ा करने की कोशिश करता

है - औरत कॉलोनी मेम्बर जहाँ रहे वहाँ के मर्दों की बात का क्या भेलू [25] ।"

अतएव व्यक्तिगत स्पर्धा, स्वार्थ एवं ईर्ष्या की वजह से जाने-अनजाने गोड़ियर गांव और गोड़ियर गांव के शरणार्थियों के बीच विषमता का बीज बपन होता है ।

§ग§ सामाजिक समायोजन

प्रारम्भ में गोड़ियर गांव के मूल निवासी और शरणार्थी दोनों समुदायों के लोग परस्पर टकराव एवं अलगाव के बावजूद शनैः शनैः एक दूसरे के करीब आते है । दोनों समुदायों के बीच आकर्षण के साथ ही समाजिक समायोजन की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है । यहाँ पवित्रा, शरणार्थियों का नेतृत्व करने वाली लड़की अनुभव करती है कि गोड़ियर उसका खोया हुआ गांव जुम्मापुर जैसा ही है क्योंकि यहाँ के लोग धान और पाट की खेती करते है, मछली भात खाते है, गांव के घर, बागबगीचे, नदीपोखरे सब कुछ उसके जुम्मापुर जैसा ही है । किन्तु वह सोचती है कि वे § शरणार्थी § यहाँ की मिट्टी से मुहब्बत क्यों नहीं करते । वे यहाँ की भूमि को कब तक पर भूमि समझते रहेंगे । नबी नगर को पाकिस्तानी टोला कहे जाने से चिढ़े हुए लोगों को वह

25. जुलूस : पृष्ठ संख्या : 59

समझाती है कि नाम को लेकर आखिर क्या होगा ? इसी प्रकार गोमांस भक्षण की बात कहने से चिढ़े हुए अन्दू को वह समझाती है कि अगर यह बात कहने वाला दूकानदार न कहे तो अन्दू के अच्छे बिस्कुट छोड़कर उसकी दूकान के सड़े हुए बिस्कुटों को कौन लेगा ? इसका असर भी लोगों पर पड़ता है । छिदाम दास ट्यूवेल गाड़ने वाले सरकारी कर्मचारी से कहता है-" अभियंयेर बाबू देश बोलिए प्रदेश बोलिए कि प्रान्त कहिए अब तो जो है, सो यही नवीन नगर ग्राम [26] ।" यहाँ तक कि गोड़ियार गांव को पर भूमि कहने वाला काला चांद घोष भी जब पथिक्रा द्वारा कॉलोनी के एक किनारे बताए गए गोलपार्क से जुमा पुर का दृश्य देखता है तो कहता है - " दीदी ठाकरून, पर भूमि में रहकर भी जुमापुर पहुँच गया । देखो मेरी देह सभी रोये खड़े है .... "[27] गोपाल पाइन भी कारे मण्डल और रब्बी पासमान को " अपना पार्टी " का 'मानुस" समझने लगता है । और कहता है कि -" दीदी ठाकरून दूसरे देश का आदमी भी आपन पार्टी का हो यह इसी जिले में आकर देखा - समोस्त हिन्दुस्तान में [28] ।"

---

26. जुलूस: पृष्ट - 4
27. जुलूस: पृष्ट - 56
28. जुलूस: पृष्ट - 21

इस गोलपार्क से दिखने वाले जुमापुर के दृश्य के बारे में एकत्रित शरणार्थियों को समझाते हुए पवित्रा कहती है कि - " भगवान ने देखा कि अपनी जन्म भूमि की याद करते-करते हमारा हृदय कुण्ठित हो गया है । किसी काम में जी नहीं लगता इनका । किसी चीज से प्यार नहीं न यहाँ के लोगों से न यहाँ के पशु पक्षी से । किसी पर विश्वास नही जमता इनका । इसलिए भगवान ने सोचा कि चलो इन्हें अपनी लीला दिखादें । सात-आठ महीने हो गये हमे यहाँ आये । कभी तो हमारी नजर में यह हाट की झलक लेकर नहीं पड़ा फिर कल क्यों ? जानते हो- ठाकुर §भगवान§ का आदेश है यहाँ की मिट्टी को प्यार दो .....जुमापुर और नवीन नगर एक ही है [29] ।"

पवित्रा लोगों से दोस्ती, भाई चारा स्थापित करन को बुरा नहीं मानती । इसलिए जब काला चाँद कहता है कि बारिसाल जिला के लोग दोस्ती गांठने में सबसे आगे रहते है । कस्बा कॉलोनी का गौरांग सरकार भी बारिसाल का रहने वाला है और हम लोगों के जुगी, भाई भी तब पवित्रा काला चाँद को समझाती है कि दोस्ती करने में बुरा क्या है । गौरांग सरकार आज पांच सौ रूपया पाता है मारवाड़ी के मिल में ।

---

29. जुलूस: पृष्ट - 59

ग्यारह साल बिहार के शरणार्थी कैम्पों में रहते हुए पवित्रा ने बोल चाल की हिन्दी सीख ली है । नवीन नगर के कैम्प में रहते हुए उसने योगेश दास की पुत्री संध्या को हिन्दी सिखाई है । सन्ध्या भी ठेठ बिहारियों की भांति हिन्दी पढ़ती है - भारत वर्ष को भारत बर्ष " पढ़ती है और संयुक्त को संजुक्त । पवित्रा को गोड्डियार गांव और गोड्डियार गांव के शरणार्थियों के बीच खिलान-पिलान" और मिलान से परहेज नहीं है बल्कि वह इसे जरूरी समझती है । इसीलिए जब जयराम सिंह गोस्वामी तुलसी दास की एक चौपाई सुनाता है -

जहाँ रहिये तोहि सुन्दर देशू ।
जो प्रति पालहि सो हि नरेशू ।। [30]

तब पवित्रा खूब खुश होती है और यह चौपाई उसे इतनी अच्छी लगती है कि वह उससे एक बार और दुहराने का अनुरोध करती है ।

धीरे-धीरे दोनों समुदायों के लोग एक दूसरे नजदीक आने का प्रयास करते है जिससे वे और करीब आते जाते है । दिन उपरवाने के लिए कामदेव चौधरी कॉलोनी में जाता है । फिर तलेवर गोढ़ी के काली मंदिर की नींव डालने के लिए

---

30. जुलूस: पृष्ट सं0 - 82

शुद्ध दिन उचरवाने के लिए पवित्रा के पास तालेवर का लठैत जयराम सिंह जाता है । कारे मण्डल और रब्बी पास-मान बंगला कीर्तन सुनने के लिए कॉलोनी में जाने लगते हैं । क्योंकि गोपाल पाइन उनसे कहता है कि " बद नोक नाही तो ठाकुरतलाय गिया गान सुनो । चलो ! हामार देश का गान बुझता है ? [31] इसी प्रकार एक ओर जहाँ रामजय सिंघ कॉलोनी में हिन्दी कीर्तन गाने लगता है और हारमोनियम भी बजाता है, वहीं दूसरी ओर हरिप्रसाद यादव को कीर्तन सेक्रेटरी काला चांद घोष आमंत्रित करता है काला चांद कहता है कि - " ठीक है कल ही तो मंगल है । कल से ही आइये भगवान का नाम गाने के लिए भी कहीं मनाही है ? [32] यादव भी संन्ध्या को विद्यापति के गीत पूर्व में महिचन्दा कॉलोनी में सिखा चुका है ।

सामाजिक समायोजन के इसी क्रम में जब पवित्रा यह कहने के लिए गोड़ियर गांव जाती है कि कॉलोनी में जिस मिडिल स्कूल को मंजूरी मिली है वह सिर्फ कॉलोनी के लिए नहीं है बल्कि सभी के लिए है तो प्रथमतः तो लोग इसलिए विरोध करते है कि इस स्कूल में बस बंगाला चाल-ढाल बोली भाखा पढ़ाया सिखाया जायेगा । किन्तु जब पवित्रा यह कह

---

31. जुलूस: पृष्ट सं, - 21

32. जुलूस: पृष्ट सं. - 35

कर उन्हे समझाती है कि बंगला पढ़ने वाले को भी हिन्दी पढ़ना होगा । तब गाँव के लोग इसे 'वाजिब बात' जानकर मान लेते हैं ।

तालेवर गोढ़ी द्वारा दिये गये सामूहिक भोज द्वारा दोनों समुदायों के लोग खूब हिल-मिल जाते हैं । इस भोज के कुछ विरोधी भी हैं । बिश्टू और शारदा बर्मन को जहां इस खिलान-पिलान और मिलान से नफ़रत है, वहीं गोड़ियर गांव की सरस्वती देवी और पारस प्रसाद ने मिलकर बंगाल बिहार मिलन भोज का 'बाइकाट' कर दिया है। इनके अलावा पंडित रामचन्द्र चौधरी का परिवार, पहलवान की पतोहूएँ इस असामयिक भोज और सर्व संघटन से नाखुश हैं । पण्डित रामचन्द्र चौधरी का तो कहना है कि मुसलमानी खाना सबको खिला दिया । सबको पतिया प्रायश्चित करना होगा । किन्तु इन दो चार लोगों को छोड़ प्राय: सभी लोग हंसी-खुशी से भोज में शामिल होते हैं । लोगों के मन से धीरे-धीरे एक दूसरे के प्रति शंकाएँ दूर होने लगती है । बंगला मुलुक की औरतों के हाथ किसिम-किसिम का खाना खाने की इच्छा इन्हें पंक्तियों मे शामिल करती है अर्थात् वे एक दूसरे को सामाजिक स्वीकृति देते है ।

" अंतत: प्राकृतिक प्रकोप दोनों समुदायों को एक मंच पर खड़ा कर देता है । तूफान बंगाली बिहारी देखकर नहीं आता। किसी का घर गिर पड़ता है तो किसी का छप्पर उड़ जाता है । बाढ़ का पानी सबको डुबा कर चला जाता है । प्रकृति के भयंकर प्रकोप से कोई बच नही पाता चाहे वे शरणार्थी हो या मूल निवासी । सब एकाकार हो जातें है " । विभाजन के कारण ही यहा लोग शरणार्थी नही है, प्राकृतिक विपदा मूल निवासियों को भी अपने ही घर में शरणार्थी बना देती है । [33] इन्हीं की सहायता के लिए भिखारियों का दल सब गांव से शहर को चल देता है जुलूस बनाकर इन्हीं भूखे नंगे पीड़ित लोगों तथा गांव के विपदाग्रस्त लोगों की सहायता के लिए पूर्णिया सदर में नरेश वर्मा ने " चैरिटी शो " का आयोजन किया है । इन्ही पीड़ित लोगों की सेवा में अपने को उत्सर्ग करती हुयी पवित्रा महसूस करती है कि -" आमि आजजीवने प्रथमबार धन्य हइलाम [34] ।"

---

33. विपक्ष: भारत यायावर: - 227

34. जुलूस: पृष्ट - 156

तृतीय अध्याय

"जुलूस" में शरणार्थियों की आर्थिक स्थिति

" जुलूस" में शरणार्थियों की आर्थिकस्थिति:

जुलूस" में वर्णित गोड़ियर गांव और गांव के समीप बसी नबी नगर कॉलोनी के लोगों के रहन-सहन व्यवसाय और आर्थिक जीवन में बहुत कुछ समानता है, बावजूद इसके कि एक नया वर्ग है और दूसरे पुश्तैनी वाशिन्दें हैं । यह तो है ही कि गोड़ियर गांव के लोगों में कुछेक के पास धन-सम्पति और जमीन का संग्रह है । यह इसलिए भी है कि वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी से गोड़ियर गांव में रहते आ रहे है और बूंद-बूंद कर के पैसा इकट्ठा किया हैं । इस बात को गोड़ियर गांव का सबसे धनी व्यक्ति और नया मालिक तालेवर गोढ़ी स्वीकारता है कि ...." मालिकों के जलचरों से मछली, कादू (कच्छप) केकड़ा घोंघी निकाल कर पुरइन के पात और कमल गट्टा बेचकर मैने किस तरह पाई-पाई बटोरा है - इसे देखा है इलाके के लोगों ने ।" [1] फिर भी गोड़ियर गांव और नबीनगर कॉलोनी की अधिकतर जनता दारूण गरीबी की जिन्दगी ही बसर करती है । कारण बहुतों के पास धरती का एक खण्ड भी नहीं है । इसलिए कुछ दूसरों के खेत खलिहान में वे मजदूरी करते है ।

---

1. जुलूस पृष्ट संख्या - 14

कुछ खेतीहर मजदूर हैं । और कुछ के पास खेत भी है तो सिंचाई के अभाव में वे अभाव ग्रस्त जीवन जीने के लिए अभिशप्त हैं । ऐसे में वे अतत: तालेवर गोढ़ी जैसे लोगों के पास ऋण हेतु याचना करते के लिए विवश है ।

§क§ आर्थिक विषमता: -

जुलूस" उपन्यास में रेणु जी द्वारा वर्णित व्यक्तियों का रहन-सहन बहुत कुछ अखिल भारतीय औसत ग्रामीण आदमी का रहन सहन है । गोड़ियर गांव और नबी नगर कॉलोनी के लोग मुख्यत: किसानों कर्म पर आधारित जीवन जीते है । जमीन दोनों के पास है, किन्तु थोड़ी- थोड़ी । वजह यह है कि तालेवर गोढ़ी सदृश्य लोगों के पेट में गांव के लोगों की भूमि चली गयी है । तालेवर के पास पैसा है और वह लोगों की मजबूर अवस्था का लाभ उठाने में नहीं चूकता । एक बार जमीन के नाम पर लिये गये ऋण के बोझ से किसान उबर नहीं पाते और जमीन नवधनाढ्य तालेवर गोढ़ी जैसे लोगों की होकर रह जाती है । नबी नगर कॉलोनी के निवासियों के पास जो सरकार द्वारा आवंटित भूमि का पट्टा है, उसी पर वे हल-कुदाल से कड़ी मेहनत द्वारा अच्छी फसल उगा लेते है । किन्तु बारिश की अनिश्चितता और कम भूमि के कारण नबी नगर के लोग वैकल्पिक व्यवसाय ढूंढने को बाध्य जो जाते हैं ।

इस परिस्थिति में गोड़ियर गांव के किसान का रूपांतर मजूदर के रूप में और नबीनगर के लोगों विशेषकर युवकों का पेन्टीवाले के रूप में होता है ।

डा रेणु शाह अपनी कृति " पद्मीश्वर नाथ रेणु का कथा शिल्प " में "जुलूस" में वर्णित आर्थिक जीवन के बारे में लिखती है - " जुलूस" में अभिव्यक्त आर्थिक जीवन पर दृष्टि-पात करने से ज्ञात होता है कि गांवों की आर्थिक दशा कितनी सोचनीय है । गोड़ियर गांव के निवासी अधिकतर घास-फूस की झोपड़ी में रहते है । ठाकुर तल्ला भी एक झोपड़ी का ही नाम है, जहाँ कीर्तन-भजन के बाद समस्याओं पर विचार किया जाता है गोड़ियर गांव के ग्वालों के पास न भूमि है, न ही भैस गायें । वे दूसरे के यहाँ खेती और मजदूरी करके पेट पालते है [2] ।" इसी कारण जब ओलावृष्टि होती है तो गोड़ियर गांव के पचहत्तर प्रतिशत झोपडे उड़ जाते है । जान-माल की क्षति भी बड़े स्तर पर होती है । पन्द्रह आदमी मर भी जाते है, इस पत्थर पानी से । सब की आशाओं पर पानी फिर जाता है लेकिन तालेवर गोढ़ी इस दैवी प्रकोप से भी फायदा उठावेगा । ....." पानी पड़े, बज्जर गिरे भूकम्प हो अकाल

---

2. पद्मीश्व नाथ रेणु का कथा शिल्प" लेखक डा० रेणु शाह पृ० - 92

पड़े अथवा बाद आवे पैसे वालों की चांदी है । गहना, जेवर गाय, भैंस, जमीन बन्धक लेकर कड़े सूद पर रूपया कर्ज देगा । इस बार गोड़ियर गांव की सारी जमीन तालेवर के पेट में चली जायेगी [3] ।"

गोड़ियर गांव और नबी नगर कॉलोनी के जहाँ सामान्य लोग पाट के साग और धान के खेतों तथागढ़ो से मछली पकड़ कर उदरपूर्ति करते है, वहीं तालेवर गोढ़ी सदृश्य लोग न सिर्फ आराम की जिन्दगी बसर करते हैं और अच्छे-अच्छे सुस्वादु भोजन ग्रहण करते है बल्कि दिखावे के लिए पूरे गांव और कॉलोनी को भी " मूड " में आने पर भोज दे सकते हैं । बस्ती के लड़के, विश्टू के नेतृत्व में चोरी करने के लिए जल्दी-जल्दी सुबह-सुबह रूखा-सूखा खा-पीकर ट्रेन पकड़ने के लिए दौड़ते हुए नजर आते है । यह गरीबी जिजिविषा और कठिन जीवन संघर्ष उन्हें कभी-कभी उस रास्ते पर ला खड़ा करताहै, जो सामाजिक अपराध की ओर जाता है । विश्टू टिकट चेकर को जहाँ दु:ख सुनाकर "खुश" कर के सबकों यात्रा कराता है, वहीं बाभन-बनिया कामदेव चौधरी गांजा की तस्करी करता है ।

---

3. जुलूस: पृष्ट - 149

अर्थाभाव की छाया से सभी संतप्त हैं । कॉलोनी का कीर्तन सेक्रेटरी कालाचाँद घोष, हरिप्रसाद यादव द्वारा पवित्रा के नाम भेजे गए मनीआर्डर को, अपनी आवश्यकता अनुसार महसूस करता है कि " उसने जरूर ही कीर्तन पार्टी के लिए रूपया भेजा होगा [4] ।" जब पवित्रा मनीआर्डर को पोस्ट मास्टर से लौटाने के लिए कहती है तो नबी नगर कॉलोनी के प्रस्तावित स्कूल का मास्टर गोपाल पाइन कहता है कि - " हो सकता है, स्कूल के लिए चन्दा भेजा हो भले आदमी ने । मनीआर्डर लौटाना ठीक नहीं जँचता [5] ।" पुनः काला चांद घोष से जब हरिप्रसाद यादव की भेंट होती है तो कालाचांद कहता है - " फिर देने आये है क्या ? देखिए उस तरह देने से दीदी ताकरून एक नया पैसा भी नहीं लेगी । आप बतला दीजिए कि फलाने काम में खर्च कीजिए, देखिए कि रूपया लेती है या नहीं । आप हमारा नाम मत लीजिएगा [6] । गौरांग सरकार और योगेश दास के गैर बंगालियों से दोस्ती करने पर जब कालाचांद घोष टिप्पणी

---

4. जुलूस: पृष्ठ संख्या - 9
5. ,, पृष्ठ संख्या - 10
6. ,, ,, - 31

करता है तो पवित्रा उसे समझाती है कि दोस्ती करना क्या बुरा है ? गौरांग सरकार आज पांच सौ रूपये पाता है । मारवाड़ी के मिल में । तब काला चांद को स्वयं की गरीबी का और तीव्रता से बोध होता है तब वह बड़े ही करूण स्वर में कहता है - जानि दीदी ठाकरून .....गरीब से कोई दोस्ती भी तो नहीं करना चाहता [7] ।" ऐसे ही धनाभाव एवं समाज निंदा भय से ग्रस्त योगेश दास जब हरि प्रसाद यादव को देखता है तो चौंक उठता है । फिर इधर उधर देखता है, तब वह बोलता है - " आपका रूपया हम भूला नहीं हैं । जोगाड़ में लगे हुए हैं । अभी "लोन" का ऑडर आ गया है । हजार पांच सौ जरूर मिलेगा तब आपका रूपया हम आपके घर चुकाय देगा । जैसा माफिक "चुपी-चुपी" लिया था वैसा माफिक चुपी-चुपी दे आवेगा । कॉलोनी में यह बात मालूम होने से जरा .... [8] ।"

मुद्रा महिमा को तालेवर गोढ़ी का लठैत जयराम सिंह अच्छी प्रकार से समझाता है । इसीलिए जयराम सिंह तालेवर गोढ़ी से कहता है - " मालिक ! डॉगडरी पढ़ने में बहुत खर्च यह तो मशहूर है । डॉगडरी पास करने के बाद तो देखते ही

---

7. जुलूस: पृ० सं० - 33

8. ,, ,, - 29

है कि किस तरह रूपये की बरखा होती है [9] ।" पैसे के लिए ही जयराम सिंह कई बार ऐसे कार्य करता है जो न करने लायक हैं फिर भी करता है । पैसे के लिए ही वह तालेवर गोदी की तंत्र साधना के लिए अपने छोटे भाई रामजय सिंह के साथ मिलकर बदचलन औरतों की "सप्लाई" का कार्य भी करता है । एक बार तो जब कहीं कोई नहीं मिली तो राम जय सिंह ने अपने ही चहेतिन गुनमती गोरनियाँ की बलि दे दी थी । गुणमती गोरनियाँ को डाइन का गुण सीखने का लोभ और राम जय को रूपये का । यह पैसे का ही प्रताप है कि मन ही मन ऐसा सोचने वाला रामजय सिंह कि - " थूक है ऐसे पैसे पर और पेशे पर" - पुन: यह सोचता है कि ..... लेकिन रूपये के बिना कुछ नही इस दुनिया में । भाई साहब आजकल चाँदी काट रहे हैं । ऐसे दरियादिली से गांजे की पुड़िया खोलते इसके पहले नही देखा किसी ने । राम जी ने अपनी सायकिल ही दे दी है [10] ।"

यह सब टाका का ही खेल " कि कॉलोनी के सदस्य पवित्रा से नाखुश है ..." किन्तु पवित्रा के जोड़े हुए नये

---

9. जुलूस: पृ0 सं0 - 38

10. ,, ,, - 43

रिश्ते के अनुसार सभी तालेवर गोदी को ताले काका कहने लगे हैं और कॉलोनी के सैकड़े पंचान्नवे प्राणी ताले काका की कृपा दृष्टि अपनी ओर फेरने की चेष्टा में लगे रहते है [11]।"

पैसा लोगों की मन:स्थिति मानस और विशुद्ध स्वाभाविक भावों पर भी दबाब बनाए हुए है । यह इस कदर मनोवेगों को प्रभावित करता है कि बावजूद इसके कि सन्ध्या और हरि प्रसाद यादव एक दूसरे से प्राकृतिक प्रेम करते है, चाहते है, सन्ध्या इस बात से मुक्त नही हो पाती है कि उसके बाबा ने उससे यादव से 1 बहुत टाका लिया है [12] ।" इसी प्रकार टका के बल पर शादी रचाने की बात राम जय सिंह शेफाली से कहता है । इस बात को हरलाल साहा की स्त्री कनक बाला लोगों के समक्ष रखती है कि ..." शेफाली कह रही थी कि रामजोय कह रहा था हम तुम से शादी करेगा । बहुत "टाका" देगा ऐसा ही माफिक बरात लायेगा [13] ।"

अत: जुलूस के गोड़ियर वासियों एवं नबीनगर कॉलोनी के लोगों का जीवन नोट के चोट से विचलित हो यत्र तत्र

---

11. जुलूस: पृ0 सं0 - 100
12. ,, ,, - 65
13. ,, ,, - 99

छिटकता हुआ सा लगता है । यह बात और भी मुखर रूप से मुखरित होती है , छिदाम दास के मुख से तब जब कि वह अपने पेट पर से गंजी हटाकर सटे हुए पेट पर हाथ फेरते हुए बोलता है कि - " आसल चीज है यह बेटा पेट । ई साला पेट के वास्ते जो कुछ बोलना पड़े करना पड़े [14] ।"

---

14. जुलूस: पृ० सं० - 4

§क§ व्यवसाय

गोड़ियर गांव एवं नबी नगर कॉलोनी के लोगों के व्यवसाय के संदर्भ में लिखते हुए उपन्यासकार फणीश्वर नाथ रेणु लिखते है कि - " ब्राह्मण टोली में चौधरी परिवार और राजपूतों में गिन गूँथ कर एक घर बाबू साहब । बाकी लोग यजमानी पहलवानी, गाड़ीवानी, घोड़ा लदाई, दुकान, नौकरी, खेती मजदूरी और चोरी करके जीवन यापन करते है [15] ।" किन्तु गोड़ियर गांव के एक समय के जमींदार रामचन्द्र चौधरी की सारी सम्पति धीरे-धीरे तालेवर गोदरी के घर में चली गयी है । जमीन पोखरे, बाग बगीचे और मवेशी सब बड़े मुकदमें में रेहन बन्धकी गिरवी के रूप में तालेवर गोदरी ने लिखवा लिये हैं । इसलिए उनके पास अब सिर्फ चार पेड़ आम और दो गाछ कटहल बचा है । चौधरी का बड़ा बेटा अब तेल-नून की दूकान चलाता है और मझला अररिया कोर्ट में श्याम सुन्दर बाबू मुख्तार के घर रसोई पानी करता है । कहना यह है कि चौधरी परिवार धनी समाज से स्खलित होकर निर्धन वर्ग में आ गया है और अब तालेवर गोदरी ही सबसे धनवान और गोड़ियर गांव तथा नबी नगर कॉलोनी का नया मालिक भी

---

15. जुलूस: पृ0 सं0 - 12

है । इसीलिए गांव ही क्या कॉलोनी के लोग उसकी "कृपा-दृष्टि" के लिए उसका मुँह ताकते हैं ।

नबी नगर कॉलोनी के लोगों के पास गाय गोरू खूँटे पर है । धान की खेती भी है । किन्तु यही जीवन यापन के लिए पर्याप्त नहीं है । इसलिए नयी पीढ़ी पेन्शरी का धन्धा भी अपनाती है । चूकि नबीनगर के निवासी वैसे भी नये-नये हैं और गोड्डियर गांव तथा कॉलोनी के लोग शुरू-शुरू में एक दूसरे से दूरी बनाए रखते है इसके बावजूद बाद में पवित्रा द्वारा तालेवर के साथ जोड़े गये नये रिश्ते "ताले काका" के मुताबिक तालेवर की "कृपा दृष्टि" अधिकतर लोग अपनी ओर फेरने की कोशिश करते हैं । अब भी उनकी आशाओं, आर्थिक आशाओं का मुख्य आधार सरकार "द्वारा मिलने वाला अनुदान "लोन" ही है । इसीलिए जहाँ एकओर योगेश्वर दास हरि प्रसाद यादव के पैसों को चुकाने के लिए तो सरकार द्वारा मिलने वाले हजार पांच सौ रूपये के सरकारी लोन के ऑडर का इन्तजार करता ही है वहीं दूसरी ओर " शारदा बर्मन के बड़े भाई आनंद बर्मन का यह पक्का विश्वास है कि चौराहे पर एक चाय की दूकान धूम-धाम से चल सकती है[16]।"

---

16. जुलूस: पृ0 सं0 - 30

परन्तु उसे इस बात की चिन्ता खाये जा रही है कि न मालूम लोन के पैसे कब मिलते हैं ।

इसलिए पूंजी के अभाव में नबीनगर कॉलोनी के लड़कों की नयी पीढ़ी फेरी का धन्धा अपनाती है जोकि कम पूंजी का धन्धा है । इस धन्धे में संलग्न युवाओं का चित्रण करते हुए रेणु जी लिखते है कि " फेरी करने वाले नौजवानों ने एक दूसरे को पुकार कर जुलाया नहाया-धोया और अपनी -अपनी झोली-टोकरी, कनस्तर और बक्से लेकर निकले - चल रे साढ़े आठटा बाजलो ।.....गाड़ी फेल हो जाने पर "बस" नही है आज । फेरी करने वाले नौजवानों का "दलपति" है- बिशु । ट्रेन में, चेकर या गार्ड से मिलकर अपने साथियों के दुख-दर्द की कहानी सुनाकर -मौखिक ऑडर लेना, बस ड्रावर और कन्डक्टरों को खुश रखना, सामूहिक खर्च का हिसाब रखना - बिशु का काम है । महाजन भी उसी का "जामिन(जमानत) मांगते हैं [17] ।"

नबी नगर कॉलोनी की औरतें भी कर्म संलग्न कुछ-न-कुछ सदैव करती रहती है जिसमें टेबुल क्लाथ, आसनी, बटुए इत्यादि का हस्त उत्पादन शामिल है । अतएव ये शरणार्थी स्त्रियाँ

---

17. जुलूस: पृष्ट सं0 - 58

सिर्फ पैसन परस्त, खद्दाऊँ पहन कर चलने वाली और धरती पर पैर नहीं देने वाली ही नहीं हैं, जैसाकि गोड़ियर गांव के लोगों का आरोप है । कॉलोनी की स्त्रियों द्वारा उत्पादित, हस्त निर्माण की ये वस्तुएँ प्रतिमाह " खादी प्रतिष्ठान " में भेजी जाती हैं । इस कार्य का भार पवित्रा के जिम्मे है । वह अपने कार्य का लेखा-जोखा लेते हुए उपन्यास में दिखती है - "

पवित्रा अपने काम का लेखा-जोखा ले रही है - चार टेबुल क्लाथ, दो आसनी, दो दर्जन गिलास ढँकने वाले नेट कवर, पांच बटुए । दो महिने में बस यही उत्पादन । ..... बिश्टू । के हाथ कल खादी प्रतिष्ठान के मैनेजर को भेज देना है और पिछला हिसाब साफ करके पैसे .... [18] ।"

इसके अलावा " जुलूस" में चित्रित लोगों में कुछ लोग नौकरी पेशा भी है । गोड़ियर गांव के पहलवान हरवीर सिंह के पांच पुत्र प्रति माह पांच मनीआर्डर गांव में भेजते हैं । बारिसाल का शरणार्थी गौरांग सरकार मारवाड़ी के मिल में पांच सौ रूपये प्रति माह पाता है ।

नबी नगर कॉलोनी के किसान भी खूब मेहनती हैं । ये पूरी ईमानदारी से परिश्रम करते है जिसका परिणाम इनकी

---

18. जुलूस: पृ० सं० - 59

उत्तम खेती है जिसे गोड़ियर गांव के लोग भी स्वीकारते हैं । रेणु जी लिखते है कि - " नबी नगर किसानों की खेती देख कर सारे गोड़ियर गांव के लोगों को अचरज होता है । जिन खेतों में कभी कोई फसल न लगी उनमें धान के पौधे लहरा रहे हैं । पाट की खेती ऐसी, किसी ने नहीं देखी कहीं आज तक .....जी तोड़ मेहनत के साथ खेती की तरकीब जानते है ये लोग [19] ।"

अतएव गोड़ियर गांव तथा नबी नगर कॉलोनी दोनों के लिए अर्थ अर्जन के स्त्रोत कृषि, दुकान, मजदूरी, खेतीहर मजदूरी ही हैं । फिर भी नबीनगर कॉलोनी के शारणार्थी इस मायने में भिन्न है कि वे बिस्कुट, सिन्दूर अलता चिनियाबादम की फेरी भी करते हैं, जो धन्धा प्राय: गोड़ियर गांव का कोई निवासी नहीं करता ।

---

19. जुलूस: पृ0 सं0 - 132

§ग§ पूंजीवादी व्यवस्था के दुष्परिणाम:

" जुलूस में वर्णित गांव गोड़ियर एवं उसके पास बसी नबीनगर कॉलोनी में भी पूँजीवादी व्यवस्था का प्रबल प्रभाव परिलक्षित होता है । क्या गोड़ियर गांव के लोग और क्या नबी नगर कॉलोनी के शरणार्थी सभी इस महाजनी व्यवस्था से प्रत्यक्ष या प्रच्छन्न रूप से ग्रस्त है । व्यावसायरत सभी लोग अधिकाधिक धन बटोरने के स्वप्न मन में पाले हुए हैं । इनके लिए तब कुछ भी अनुचित नहीं लगता । जयराम सिंह पवित्रा द्वारा खेती बारी के विषय में पूछने पर जो जबाब देता है ।वह यह है - " दीदी जी, मेरे पास जमीन कहाँ ? हाँ, मालिक की खेती की बात पूछती है तो खेती अच्छी है । और खेती अच्छी हो या खराब मालिक को इससे क्या ? एक मिल अररिया कोर्ट में भी चलायेगें । अब खेती क्या है ?" बिचनेस" और मिल" चलाने वाले के हल आसमान में चलते है [20] ।"

स्पष्ट है, ग्रामीण अर्थ व्यवस्था अब निरी ग्रामीण ही नही रही, उसका मशीनी करण भी होने लगा है । उत्पादन के ढंग में परिवर्तन के साथ ही मनुष्य भी इन मशीनों में पिसने

---

20. जुलूस: पृ० सं० - 146

लगा है । गांव में बाढ़ आये या पत्थर पड़े तालेवर गोढ़ी को इससे क्या फ़र्क़ पड़ने को है, वह तो इस दैवी प्रकोप का भी भरपूर फ़ायदा उठावेगा । वह तो " गहना जेवर गाय भैंस, जमीन बन्धक लेकर कड़े सूद पर रूपया कर्ज देगा [21] ।" पण्डित रामचन्द्र चौधरी की सम्पूर्ण सम्पदा सिमट कर तालेवर के घर में कुण्डली मार कर बैठ गई है क्योंकि केस लड़ने के लिए सब कुछ चौधरी तालेवर गोढ़ी के यहां रेहन बन्धकीरख चुके चुके हैं । किन्तु इतना पर भी तालेवर गोढ़ी अपनी सारी सम्पत्ति को सूद खोरी का नही मानता वरन् उसका कहना है कि यह सब उसके मेहनत का पैसा है । वह यह दावा दृष्टान्त के साथ करता है कि - " उसने गांव के बाबू लोगों के जोर जुलुम के बावजूद जलकरों से मछली काछू §कच्छप§ केकड़ा घोंघी निकालकर - पुरइन के पात और कमलगट्टा बेचकर मैने किस तरह पाई पाई बटोरा है - इसे देखा है गांव के लोगों ने [22]।"

तालेवर गोंढ़ी कभी काली मंदिर की नींव डलवाता है तो कभी-कभी शिवाला बनवाकर शिवलिंग की स्थापना कर - वाता है । ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार आज भी भारतीय पूंजीपति कारखाने के प्रवेश द्वार पर मंदिर का निर्माण करवाते हैं ताकि मजदूर वर्ग में भक्ति के माध्यम से व्यक्ति के प्रति

---

21. जुलूस: पृ० सं० - 149

22. ,, ,, - 14

भक्ति भाव बन सके और वे मिल मालिक के उपर ईश्वर की कृपा को महसूस कर सकें तथा अपने शोषण को पूर्वजन्म का प्रताप मानकर चुप चाप सहते चले जाएं । भले ही मिलमालिक मंदिर स्थापना के बाद कभी भी उस मंदिर में मत्था टेकने के लिए न जाय । तालेवर भी इसीलिए मंदिर शिवालय बनवाता है कि लोग उसके खिलाफ कुछ न कर सकें और उसका धनवान होना प्रभु की इच्छा समझें । तालेवर को मालूम है कि जब वह नाच पार्टी का " मूल गैन " था तब सारे इलाके पर "बाभन राजपूतों" का राज था । नाच पार्टी के कारण गोढ़ी-गुआर कमार कहार, कुर्मी, धानुक, केवट कैवर्त आदि पिछड़ी जातियों का संगठन हो गया था । इलाके के एक से एक अगिया बैताल बाभन और पानीदार सांप राजपूत इस संगठन के सामने "फुस्स" हो गये थे । अगर तालेवर गोढ़ी फिर से किसी नाच पार्टी को प्रोत्साहित करेगा तो उससे प्रेरित संगठन के सामने खुद तालेवर "फुस्स" हो जायेगा । इसी कारण तालेवर ने - जगन्नाथ पुरी में नाच पार्टी के लिए पर्दा पोशाक खरीदने का विचार छोड़ दिया था । उसे स्वप्न में आभास हुआ कि नाच पार्टी की सहायता करके वह अपने पैर में ही कुल्हाड़ी मारने जा रहा है ।

तालेवर गोदी धन के मायने में इतना कंजूस है कि डाक्टरी पढ़ने वाले अपने छोटे पुत्र कृष्ण जी गोड़े की शादी मुख्तार कुलदीप माझी से इसलिए करता है कि वह उसके बेटे को "नन्दन" में पढाना चाहे या अमेरिका या रूस में सरकार से पैसा दिला देगें । केन्तु जब कृष्ण जी पैसा मांगता है तो तालेवर अपने बड़े पुत्र रामजी गोड़े को कहता है कि "पोस्ट-काट" लिख दो साफ-साफ एक पैसा भी नहीं देगें । तब वह पुन: अपना उदाहरण देते हुए रामजय सिंह से कहता है कि " मैंने कौन सी डाक्टरी पास की है । अपने जमानेमें जैसा हम कमाते थे सोतो तुमने देखा ही है । सिर्फ " चिरागी" का पैसा लेकर "चष्मेकर" पूजने पर इतनी आमदनी होती थी । यदि हम भी बेमारी देखने की फीस लेते फ्री "मन्तर" पांच रुपया और एक-एक " जन्तर" का दाम दस रूपया लेते तो ....कहाँ जगह थी ? [23]

रेणु जी ने "जुलूस" में एक स्थान पर गांव की लक्ष्मी के विषय में लिखा है कि - " तालेवर गोदी का मिल चल रहा है । आजकल वह अपने गोदाम में जमे हुए धान को कूट रहा है - दूने दाम में चावल बिक्री करने का यही समय है ।

---

23. जुलूस: पृ० सं० - 38

चारो ओर धान और पाट के खेत - हरे भरे । लछमी खेतों में सजी-धजी खड़ी है धानी रंग की साड़ी पहनकर । मन्द-मन्द हासिनी । खेतिहर किसानों के बैठे -बैठे मलार गाने के दिन है । खेतों में लछमी हँसती है घर में लछमी हँसती है । .....लेकिन जब तालेवर गोदी का मिल चलने लगता है तो लछमी के चेहरे पर एक आतंक की छाया छा जाती है [24] । " गोड़ियर गांव का तगड़ा शोषक तालेवर गोदी फिर भी अन्य पूंजीपतियों की तरह देश की दुरवस्था का सारा दोष कांग्रेसियों के ही मत्थे मढ़ता हुआ कहता है -" सब कसूर है ई चोरवा सबका [25] ।"

तालेवर गोदी की भांति एक समय के गोड़ियर गांव के ध्वस्त जमींदार पण्डित रामचन्द्र चौधरी है । जो धन के लिए ललायित है वे अपना परिचय आप पवित्रा को देते हुए कहते हैं - " देवी जी मेरा नाम है पण्डित रामचन्द्र चौधरी इस गोड़ियर गांव का पुराना जमींदार ।....दुर्दिन और दुश्मनों ने मिलकर यह दिखाया है कि अपनी ही जमीन पर दूसरों के हल चलते देखकर ....अब क्या बतावें देवी जी... [26] ।"

---

24. जुलूस: पृष्ट सं0 - 133
25. जुलूस: पृष्ट सं0 - 16
26. जुलूस: पृष्ट सं0 - 104

इनका ज्येष्ठ पुत्र कामदेव चौधरी " नून तेल" की दूकान करता है । परन्तु जल्द-से-जल्द महाजन होना चाहता है । इसके लिए वह गांजे की तस्करी की तरकीब निकालता है । पण्डित रामचन्द्र चौधरी भी अपने पुत्र के इस कार्य में न सिर्फ सहयोग करते हैं बल्कि झोला उठाकर झट कामदेव के साथ चल भी देते हैं क्योंकि येन-केन-प्रकारेण धनी जो बनना है, उन्हें। महाजनी संस्कृति की गिरफ्त में आये पिता पुत्र के बारे में लेखक का कहना है कि " पण्डित रामचन्द्र चौधरी और उसके पुत्र कामदेव चौधरी ने इस बार डेढ़ हजार रूपये का मुनाफा किया है । इसलिए दोनों ने परामर्श किया है - यदि कुछ दिलेर औरतों को अपने गिरोह में रख लिया जाये तो...? पहलवान की छोटी पतोहू ने सब कुछ सुनकर कहा - ठीक है । इस बार कामदेव की मां के साथ वह भी जायेगी [27]।" यह है पूंजीवादी वृति का पतित प्रभाव जो व्यक्ति के कर्म कुकर्म के बीच विभेद बुद्धि भी हरलेती है । पैसों के लिए पिता पुत्र मां तो लिप्त ही हैं वे दूसरों के घरों की औरतों को भी इस असामाजिक धन्धे में अपने स्वार्थ के लिए खींच लाते है ।

---

27. जुलूस पृष्ट सं0 - 102

जहाँ तालेवर गोढ़ी का बेटा रामजी गोढ़ी एक और मिल अरंरिया कोर्ट में बैठाने के लिए सोचता है वहीं पण्डित रामचन्द्र चौधरी क्या सोचते है, इस मन: स्थिति का चित्रण लेखकयों करता है - " पण्डित रामचन्द्र चौधरी को इस बार फिर एक हज़ार मुनाफ़ा ....साले गोढ़ी के मिल को देखना है । पण्डित रामचन्द्र चौधरी सिर्फ धान कूटने वाला और आटा पीसने वाला "मिल " नही चूडा कूटने वाला, तेल पेरने वाला "मिल" बैठावेगा [28] ।"

इसीलिए जब ओला वृष्टि से सारा गांव तबाह होता है और नबी नगर कॉलोनी के लोगों की झोंपड़ियाँ नष्ट होती हैं तो पण्डित रामचन्द्र चौधरी प्रसन्न होते है ...." रोज अपनी जमीन में तालेवर गोढ़ी की फसल देखकर देह में आग "लहक" जाती थी । इस बार पण्डित रामचन्द्र चौधरी भी रूपया लगावेगा - ड्योढ़े सूद पर [29] ।"

उधर रामजय भी मिल लगाने की बात सोचता है . ..." इसी साल गांव में मुसम्मत के मिल का " खुट्टा" गाड़ कर दिखला देगा [30] ।"

---

28. जुलूस: पृष्ट सं0 -133
29. जुलूस: पृष्ट सं0 -149
30. जुलूस: पृष्ट सं0 -134

हरि प्रसाद यादव भी तालेवर गोढ़ी को सुना कर कहता है - " जिस दिन मेरी शादी होगी उसी दिन मेरा मिल भी बैठेगा । मेरे मिल का नाम जानते है - दि सन्ध्या राइस एण्ड आइल मिल, दि सुक्की बेलाही, दि पूर्णिया डिस्टीट । ....छद मामा ने लायसेंस करवाकर नाम रजिस्ट्री करवा दिया है .... [31] ।"

धनवान होने की माया से नबी नगर के टुटपुंजिये फेरीवाले भी नही बचपाते । इस संदर्भ में रेणु जी लिखते हैं -" कॉलोनी के लोग भी तालेवर गोढ़ी की मिल के बोल पर पैर मिलाकर चलते हैं । ... सिर्फ फेरी छोड़ कर हाट में दुकान लगायेगा । पूंजी बढ़ायेगा । पूंजी बढ़ते-बढ़ते-बढ़ते ..... [32] ।"

स्पष्ट है , पूंजीवाद के प्रभाव से गोड़ियर गांव और नबी नगर कालोनी के व्यवसाय सम्बद्ध सभी लोग प्राय: मन-कर्म-बचन से किसी-न-किसी प्रकार प्रभावित आवश्य है । इसका दुष्परिणाम अंतत: यह होता है कि व्यक्तिगत हित एवं स्वय के स्वार्थों की पूर्ति के लिए समाज के हितों का

---

31. जुलूस: पृष्ट सं0 - 144

32. ,, ,, ,, - 135

गला घोट ने में भी पूंजीवादी मानसिकता वाले लोगों को कहीं कोई दु:ख का एहसास नही होता क्योंकि इस व्यवस्था की अनिवार्य बुराई ही वैसे भी -'कुछ को बहुत सुख और बहुतों को दुख है'। इसलिए इस व्यवस्था में जी रहें व्यक्तियों का मानसिक पतन इस कदर हो जाता है कि वे आखिर में मानव एवं मानवता के प्रति सहानुभूति और सम्वेदना से रहित हो जाते हैं ।

चतुर्थ अध्याय

"जुलूस" में शरणार्थियों का सांस्कृतिक जीवन

चतुर्थ अध्याय

• जुलूस में शरणार्थियों का सांस्कृतिक जीवन

संस्कृति शब्द का प्रयोग प्राय: अनेक अर्थों में किया जाता है । समान्य रूप से बोल चाल की भाषा में इससे संगीत, नृत्य और साहित्य का बोध होता है । करीब - करीब इसी अर्थ में सांस्कृतिक कार्य-क्रम आयोजित किये जाते हैं । प्राय: लोग " सुसंस्कृत व्यक्ति" अथवा " संसंस्कृत " परिवार स दृश्य शब्दों का प्रयोग भी करते हैं । यहाँ यह संदर्भ परिष्कार और अभिरूचि को व्यक्त करता है ।

" प्रख्यात मानव शास्त्री टायलर ने संस्कृति को परिभाषित किया था । उनका परिभाषा आज भी सर्वमान्य है । उनके अनुसार संस्कृति एक ऐसी जटिल सम्पूर्णता है जिसके अन्तर्गत ज्ञान विश्वास, कला, नैतिकता, कानून प्रथा तथा समाज के एक सदस्य के रूप में मनुष्य द्वारा प्राप्त दूसरी क्षमताएँ और आदतें सम्मिलित करते है [1] । "

---

1. सत्यमित्र दुबे एवं दिनेश शर्मा:समाजशास्त्र एक परिचय, पृष्ठ सं0 - 352

उपर्युक्त परिभाषा के विश्लेषण के आधार पर हम यह कह सकते है कि मनुष्य की समस्त कृतियाँ और सीखें हुए व्यवहार संस्कृति के अन्तर्गत आते हैं ।

" प्रत्येक समाज की अपनी एक सामान्य संस्कृति होती है । जैसे पूरे भारतीय समाज की एक सामान्य संस्कृति है, जिसके अन्तर्गत कृषि अर्थ व्यवस्था, संयुक्त परिवार नातेदारी सम्बन्धों का महत्व, शास्त्रीय संगीत और नृत्य आदि हैं । लेकिन भारतीय समाज में अनेक उपसंस्कृतियाँ भी है । जैसे तमिल, असमिया, बंगाली, पंजाबी और गुजराती संस्कृति आदि । इसी तरह अमेरिका समाज की एक सामान्य संस्कृति है । लेकिन इसके साथ-साथ गोरे और नीग्रों लोगों, उत्तर तथा दक्षिण, पूरब और पश्चिम अमेरिका की उप संस्कृतियाँ भी है [2] ।" उप संस्कृतियों के विकास में पारिस्थिति की और भौगोलिक भिन्नता, ग्रामीण एवं नगरीय जीवन पद्धतियाँ विभिन्न वर्ग जैसे श्रमिक, मध्यम और पूंजीपति वर्ग का बहुत बड़ा योगदान होता है । इस के अतिरिक्त एक भाषा अथवा एक धर्म से सम्बद्ध लोगों की अपनी उप संस्कृति भी होती है । भारत में भाषागत क्षेत्रों और उपसंस्कृतियों में काफी दूर तक सम्बन्ध है ।

---

2. सत्यमित्र दुबे एवं दिनेश शर्मा: समाजशास्त्र एक परिचय, पृष्ट सं0 - 357

" जुलूस" में वर्णित गोड़ियर गांव एवं नबी नगर कॉलोनी में दो उप संस्कृतियों, मिथिलांचल की " मैथिल संस्कृति " और बंगला देश की 'बंगाली संस्कृति' की, अलगाव टकराव एवं समन्वय स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है ।

(क) सांस्कृतिक अलगाव:

गोड़ियर गांव एवं नबी नगर के लोग प्रारम्भ में एक दूसरे से सांस्कृतिक स्तर पर खूब टकराते हैं । दोनों ही पक्ष के लोगों की अपनी सांस्कृतिक श्रेष्टता का बोध कुछ बढ़ चढ़कर ही है । गोड़ियर गांव की संस्कृति मूलत: वैष्णव संस्कृति है और बंगला देशी शरणार्थियों की संस्कृति भी वैष्णव संस्कृति ही है । किन्तु उनके यहाँ " मछली " खाना मांसाहार नही माना जाता बल्कि बंगाली लोग "मछली " को "जल तरोई " की संज्ञा देते हैं । योगेश दास हरिप्रसाद यादव को इस संदर्भ में समझाते हुए कहता है कि " हमारे देश में कहावत है - मांगुर माछ आ बेटा हरि हरि बोल [3]।" योगेश दास की पत्नी गिरिबाला देवी को हरिप्रसाद

---

3. फणीश्वर नाथ रेणु: जुलूस:, पृष्ट सं0 - 32

यादव के वैष्णव होने पर इसलिए अचरज होता है कि वह कैसा वैष्णव है, जो मछली नहीं खाता वह सवाल करती है - " वैष्णव कैसा वैष्णव हो तुम ? माछली नहीं खाते ? यह तो तरोई है । जल तरोई [4] ।" किन्तु गोड़ियर गांव के लोगों को बंगाली लोगों के मांस भक्षी वैष्णव होने पर आपत्ति है । इसलिए गोड़ियर के लोगों के साथ-साथ उनके बच्चे भी दोहा-पद शैली में बंगालियों के मांसाहारी वैष्णव होने की बुराई करते रहते हैं । बच्चे गांव में फेरी करने वाले शरणार्थी लड़कों को चिढ़ाते हुए कहते है - " ...

" दाल पकाया भात पकाया परवल की तरकारी
मीन मारकर भोग लगाये अधम जात बंगाली ।"

इसकी प्रतिक्रिया में बंगाली लड़के 'असब्बो' "जोंगली " खोड्डा" जैसे शब्दों का प्रयोग करते है । फलतः दोनों समुदाया के लोगों के बीच दूरी बनती जाती है जो संस्कृतिक एकता में बाधक बनती है ।

पवित्रा को दुःख है कि लोग क्यों नही नबीनगर की भूमि को अपना समझते जबकि इस देश में कुछ भी ऐसा नहीं है जो पवित्रा के देश में नही था । पेड़, फल, फूल फसल जानवर पशु पक्षी सिर्फ हल्देपाखी को छोड़कर । सिर्फ अन्तर है तो नाम में " माछ-रांगा" को यहाँ के लोग "मछलोकनी कहते है।

---

4. पशीश्वर नाथ रेणु: जुलूस, पृ० सं० - 32

और उल्लू ही यहाँ का पूर्वी बंगाल का "पेंचा" है । लोगों के नामों में "लाल" प्रसाद" झा तथा नारायण लगा देने से क्या होता है चेहरे तो नहीं बदल जाते । लेकिन नबीनगर कॉलोनी के निन्नानबे प्रतिशत लोग ऐसे है जो पवित्रा की राय से सहमत नहीं है । लेखक के अनुसार उनकी आपत्ति यह है कि " की मुश्किल दीदी ना करन ...पर छाद टाइटेल अपने गांव के किसी आदमी के नाम में लगा दो, देखोगी फिट ही नहीं करेगा [5] ।" इस प्रकार नबीनगर के अधिकतर लोगों के विचार में अपनी सांस्कृतिक पहचान को अलग बनाये रखने की दृढ धारणा मौजूद है । इसलिए वे पवित्रा के विचारों का विरोध करते हैं और नबी नगर को "पर भूमि" तथा अपना देश मानने को तैयार नहीं हैं ।

पूर्णिया शहर के खुदो बाबू को स्वयं इस बात पर गर्व है कि वे तीन चार पीढ़ी से पूर्णिया जिले में रहते आ रहे हैं किन्तु खुदो बाबू आजतक गुदो बाबू ही हैं । खुदो प्रसाद या खुदो सिंह चाहे खुदो वर्मा नहीं हो गये । खुदो बाबू की यह सांस्कृतिक पहचान एक प्रकार की छद्म धारणा है । क्योंकि खुदो बाबू स्वार्थवश योगेश दास की पुत्री संन्ध्या

---

5. पगीश्वरनाथ रेणु:जुलूस, पृ0 सं0 - ।

का विवाह हरिप्रसाद यादव से कराने के लिए तब तक "मेहनत" करते रहने की बात करते है जब तक कि विवाह नहीं हो जाता । वे यह सब इसलिए करते है कि - " हरिप्रसाद यादव बहुत बड़े काश्तकार का बेटा है । बहुत बड़े मुकदमे बाज का बेटा है । खुदो बाबू हर साल उसके यहाँ घास और बाँस की मंगनी करने आता है और यादव के बूढ़े बाप को रिझा-बुझा कर एकाध बोड़े चावल चूड़ा भी ले आता है [6] ।" यह है रेणु जी की टिप्पणी खुदो बाबू के स्वार्थ आधारित सांस्कृतिक पहचान के उपर । यही खुदो बाबू पवित्रा एवं नरेश वर्मा के सम्बन्धों को लेकर बड़ी बारीकी से सांस्कृतिक विलगाव की बात करते है । रेणु जी ने खुदो बाबू के इस सांस्कृतिक अलगाव की सोच एवं वक्तव्य को एक स्थान पर यों रखा है - " खुदो बाबू ने बीड़ी सुलगाते हुए कहा - देखिए एक बात हम पूछते हैं, सबसे पहले । यहाँ का लोग, माने बिहारी चाहे हिन्दुस्तानी भी हिन्दू है । ठीक बात है । और पंजाब में भी हिन्दू है, मद्रास में भी हिन्दू है । लेकिन इस पूर्णिया में क्या "होल" बिहार में बतलाया दीजिए कि कितना बिहारी का जोरू मद्रासी या पंजाबी है ? ठीक बात शादी जिसको करना है,

---

6. फणीश्वरनाथ रेणु:जुलूस, पृ० सं० - 130

यहाँ पूरनियाँ में क्या बंगाली लड़के का अभाव है ? ..... सेा पवित्रा देवी यदि शादी करना ही चाहती है तो नरेश वर्मा से काहे और भी चालू पुर्जा " लड़के हैं बंगालियों के घर में । नरेश से भी तेज । जैसा नाच में वैसा गान में, वैसा फुटबाल में - जैसा खोजिए [7] ।" इस प्रकार खुदो बाबू नवीनगर के लोगों के मन में गोड़ियर गांव के लोगों के साथ सांस्कृतिक दूरी को पाटने के बजाय और दृढता से अलगाव की भावना भरते हैं ।

नवी नगर कॉलोनी के लोगों के दैनिक जीवन में संन्ध्या काल के " संझावाती" और कीर्तन का काफी महत्व है । उनके कीर्तन को सुनने के लिए गोड़ियर गांव के लोग ललायित हैं । किन्तु दोनों लोगों की सांस्कृतिक और सामाजिक दूरी उन्हें दूर-दूर रखे रहती है । फिर भी कारे मण्डल, रब्बी पासवान, जयराम सिंह सदृश्य लोग कभी-कभी कॉलोनी में जाने का साहस करते हैं । हालाँकि ये लोग कॉलोनी रक्षादल" की "सीटी" और कानून से सदैव भयभीत रहते हैं । कॉलोनी में प्रत्येक मंगलवार की सांझ को ठाकुर-तल्ला नामक झोंपड़े में सभी स्त्री पुरूष जमा होते हैं और

---

7. पणीश्वरनाथ रेणु: जुलूस, पृ0 सं0 - 128

कीर्तन गाते हैं । कीर्तन के बाद गांव की समस्याओं पर, व्यक्ति की समस्याओं पर बातें होती हैं । पवित्रा इस गोष्ठी का संचालन करती है । किन्तु इस बैठकी में बाहर का कोई व्यक्ति नही जा सकता । इसलिए गोड़ियर के लोग बंगला कीर्तन सुनने की प्रबल इच्छा रखते हुए भी ऐसा नहीं कर पाते ।

नबी नगर कॉलोनी के प्रस्तावित स्कूल का " इंग्रेजी मास्टर" गोपाल पाइन ने लोगों को " आपन पाटी" और " उस पाटी" के खाने मे बाँट रखा है । जो लोग बंगला संस्कृति, रीति-रिवाज और बंगला देश की चीजों की बड़ाई करते हैं, उन्हें वह " आपन पाटी " का "मानुस" कहता है और सांस्कृतिक गर्व या कि विजय महसूस करता है । जबकि लोग इनके खिलाफ कुछ बोलते हैं तो उन्हें वह "उस पाटी" के "मानुस" की संज्ञा देता है । उसे वह भला आदमी नहीं मानता "मिष्टीगान" गान सुनने के लोभ में कॉलोनी के पास पकड़े गये कारे मण्डल और रब्बी पासवान के मुख से जब गोपाल पाइन अद्भुत और खिचड़ी बंगला वार्ता सुनता है तो वह उनको 'आपन पाटी" का "मानुस" मान लेता है । गोपाल पाइन की इस मन: स्थिति का लेखक ने इस प्रकार चित्रण किया है " गोपाल पाइन समझ गया , दोनों

" आपन पाटी" का "मानुस" है । वह कहा करता है - दीदी ठाकुरून, दूसरे देश का आदमी भी "आपनपाटी" का हो यह इसी जिला में आकर देखा - सो-मोस्त हिन्दुस्तान" में । यहाँ पर कुछ लोग ऐसे भी मिले हैं जो हम लोगों की बोली में बात करना चाहते हैं । बंगला देश की और बंगला देश की सभी चीज की तारीफ करते है और अपने देश को "भुच्च" अर्थात् मूर्ख कहते है[8] ।"

बंगाली शरणार्थी ही नहीं गोड़ियर के लोगों में भी अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति सर्वत्र सजगता देखी जा सकती है । भाषा तो वैसे भी किसी भी संस्कृति का एक अविभाज्य अंग है । इसलिए रामजय सिंह गांव के बच्चों को कॉलोनी के 'मिडिल स्कूल" में भेजने पर आपत्ति करता है क्यों कि उसकी समझ के अनुसार वहाँ बंगला भाषा में शिक्षा दी जायेगी तब सभी लोग बंगालियों की भांति "रिफ्यूजी" हो जायेगे । इसलिए जो काम पूर्वजों ने नहीं किया वह काम ये लोग भी नही करेगें । अत: जब पवित्रा गोड़ियर गांव में जाकर गांव के लोगों से अपने बच्चों को कॉलोनी के स्कूल में भेजने की बात कहती है तो जयराम सिंह आपत्ति करता है ।

---

8. पणीश्वरनाथ रेणु : जुलूस, पृ० सं० - 21

उसका कहना है कि " नहीं सभी के लिए नहीं । वह सिर्फ आप लोगों के बच्चों के लिए खुला है । पूछिए, कैसे ? तो सुनिए - आप लोगों के स्कूल में सब बंगला चाल-ढाल बोली भाखा पढ़ाया सिखाया जायेगा । वह पढ़ाई हमलोग पढ़कर क्या करेंगे जिससे कि सभी बंगाली हो जायें [9] ।" कुछ इसी प्रकार की भाषा सम्बन्धी सतर्कता या कि सांस्कृतिक बोध बंगालियों के बीच भी है । बंगाली लोग भी बिहारियों की भांति हिन्दी भाषा के विरूद्ध प्रतिक्रिया करते हैं । कॉलोनी के " मिडिल स्कूल के मास्टर गोपाल पाइन की घरवाली की चिन्ता है कि " सब गेलो.....सब गेलो । अब देश गया, गांव गया-जाति धर्म बाकी था सो यहाँ अब ....समझो गया ।....सुनती हो, बंगला नहीं सभी सभी बच्चों को हिंदुस्थानी भाषा पढ़ना होगा । अपने (अर्थात् गोपाल पाइन) कह कह रहें थे स्कूल की नौकरी इस शर्त पर मिली है कि पहले खुद हिन्दुस्थानी भाषा पढ़कर " परीक्खा " देना होगा । अब समझो, जिस देश में मास्टर को भी "परीक्खा" देना पड़े वहाँ कोई मास्टर क्या पढायेगा [10] ।"

---

9. पगोश्वरनाथ रेपु:जुलूस, पृ0 सं0 - 89

10. ,, ,, पृ0 सं0 - 99

अतएव बंगाली बिहारियों की तथा बिहारी बंगालियों की सांस्कृतिक विशेषताओं, रहन-सहन, रीति-रिवाज बोली भाषा को अपनाने में प्रारम्भ में सांस्कृतिक अलगाव महसूस करते हैं । किन्तु कालांतर में वे एक दूसरे की संस्कृति को कुछ-कुछ स्वीकृति भी देते हैं । यह स्वीकृति की प्रक्रिया अंततः सांस्कृतिक एकीकरण को जन्म देती है ।

यह सांस्कृतिक अलगाव प्रारम्भ में स्थानान्तरण के कारण था और बाद में एक साथ रहते हुए तथा एक दूसरे को समझने के बाद उनमें सांस्कृतिक एकीकरण की प्रक्रिया भी सक्रिय हुई ।

§ख§ सांस्कृतिक एकीकरण:

गोड़ियर गांव एवं नबी नगर कॉलोनी के शरणार्थियों के बीच सांस्कृतिक मेल-मिलाप के कार्य का नेतृत्व "जुलूस" उपन्यास की नायिका पवित्रा करती है । पवित्रा शरणार्थियों एवं गोड़ियर के लोगों के बीच पारस्परिक सहनुभूति पनपाने के लिए पूरे उपन्यास में प्रयत्नशील है । लोक संस्कृति मूलक समाज का सपना उपन्यासकार रेणु का स्वप्न है । पवित्रा उपन्यास के आखिर में अपरिचय अजनबीपन, उदासीनता, अकेलापन आदि के कारण परस्पर विच्छिन्न लोगों को लोक संस्कृति मूलक समाज के रूप में गठित करने का संकल्प करती है । किन्तु यह कार्य वह उपन्यास के आरम्भ में ही प्रारम्भ कर देती है । वहलोगों को कॉलोनी बसने के साथ ही समझाती है कि " हमलोगों का भाग्य अच्छा है कि इस जिले में हमें बसाया गया । यहाँ धान और पाट की खेती होती है, हम भी अपने देश में धान और पाट की खेती करते थे । यहाँ के लोग भी मछली भात खाते हैं । गांव घर बाड़ा बगीचे-पोखर और नदी -सब कुछ अपने देश जैसा .... ।। ।"

।।. पणीश्वरनाथ रेणु: जुलूस, पृ० सं० - 2

जब इतना समझाने के बाद भी लोग नबी नगर और गोड्डियर को " परभूमि" ही मानते हैं तो पवित्रा बहुत दुखी होती है । तब उसकी मुख्य चिंता यह होती है कि क्यों नहीं लोगों को यहाँ की मिट्टी से मोह है । कालांतर में गोपाल पाइन और काला चांद घोष को यहाँ के लोग "आपन पाटी" और 'अपने देश" जैसा सब कुछ लगने लगता है । यह सब पवित्रा द्वारा लोगों को समझाने-बुझाने का ही प्रतिफल है ।

पवित्रा दस ग्यारह साल से बिहार के विभिन्न इलाकों में रह कर बोलचाल की हिन्दी सीख गई है । नबी नगर में रहते हुए उसने योगेश दास की पुत्री सन्ध्या को हिन्दी सिखाई है । सन्ध्या भी हिन्दी पढ़ना ज्यादा पसन्द करती है । " सन्ध्या ठेठ बिहारियों की तरह हिन्दी पढ़ती है - भारत वर्ष को "भारतवर्ख" पढ़ती है संयुक्त को संजुक्त" [12] । यही क्या सन्ध्या बिहारी औरतों की भांति साड़ी पहनती है और गहने भी । इसीलिए पूर्णिया शहर के खुदो बाबू को सन्ध्या के "स्वदेशीय" साड़ी पहने पर आश्चर्य और आपत्ति है पवित्रा संध्या को तो हिन्दी पढ़ाती ही है कॉलोनी के बच्चों को भी हिन्दी पढ़ाने पर बल देती है । गोड्डियर के लोगों को समझाते हुए वह कहती है कि " कॉलोनी के

---

12. परमेश्वरनाथ रेणु, जुलूस, पृ० सं० - 6।

बच्चे हिन्दी में ही सब कुछ पढ़ेंगे । बंगाला पढ़ने वाले को भी हिन्दी पढ़ना होगा [13] ।"

इस प्रकार भाषाई स्तर पर लोगों के बीच बाद में उत्सुकता बढ़ती है । लोग एक दूसरे की भाषा सीखने का प्रयास करते हैं । कारे मण्डल और रब्बी पासमान जहाँ अद्भुत और खिचड़ी" बंगला बोलते हैं वहीं पण्डित रामचन्द्र चौधरी का दावा है उनकी सारी उम्र पूर्वी बंगाल में ही कटी है । इसलिए वे भी बंगला भाषा जानते हैं । रामजय सिंह भी बंगला बोली की नकल करता है और कॉलोनी के लोगों बच्चे-बुढ़ेढ़ सभी को हँसा-हँसा कर लोट-पोट कर देता है । वह संत कबीर दास की उल्टी बानी के साथ-साथ बंगला बंगला में भी पद्य सुनाता है -

अर की कोड़ेछो खाबुर-खुबुर-की बोले छो घांटी
मनार भीतर बेंग बोले छो-मूस कोड़ेछो माटी
मुशाके मारि लोरे मुशाके ..... [14] "

लोक कला और सांस्कृतिक माध्यम से विषमता को कम करने का प्रयत्न उपन्यास में किया गया है । सांस्कृतिक

---

13. पद्मीश्वरनाथ रेणु: जुलूस, पृ० सं० - 89
14. ,, ,, ,, पृ० सं० - 83

आदान - प्रदान इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है । हरिप्रसाद यादव कीर्तनकार है । उसने सन्ध्या को विद्यापति का गीत- " जय जय भागिनी असुर भयाउनि" - सिखाया है और प्रान्तीयता के भेद को लांघ कर हरिप्रसाद यादव और सन्ध्या एक दूसरे के निकट आ गए है । अंतत: दोनों की शादी सम्पन्न होती है । इस कार्य में पवित्रा का आशीर्वाद उन्हें प्राप्त है । इसी प्रकार बंगला कीर्तन सुनने के लिए कारे मण्डल और रब्बी पासमान कॉलोनी में जाते हैं । काला चांद घोष हरिप्रसाद यादव को कीर्तन में सम्मिलित होने के लिए बुलाता है । जयराम सिंह जहां एक ओर हारमोनियम बजाता है वही दूसरी ओर हरिप्रसाद "नागिन" फिल्म का "डान्स" करता है ।

सांस्कृतिक मेल-मिलाप के क्रम में गोड़ियर गांव एवं नबी नगर कॉलोनी के लोग एक कदम और आगे बढ़ते हैं जब कि दोनों लोग गांव के मालिक तालेवर गोढ़ी द्वारा दिये गये भोज में सम्मिलित होते हैं । किन्तु, खान-पान की भिन्नता के कारण गोड़ियर के लोग "पुलाव" को मुसलमानी खाना समझ कर विरोध करते हैं । किन्तु जब उन्हें बताया जाता है कि पोलाव अच्छा चावल, घी और मसाला से बनाता है तो लोग जय-जय कार करते हुए भोज में शामिल होते हैं । इस

भोज में रब्बी पासमान और कारे मण्डल "बाला-लखिन्दर-बेहुला" और सावित्री नृत्य प्रस्तुत करते है । लोग एक साथ मिल बैठकर खाते हैं । अधिकांश लोग इस सर्व संगठन और "खिलान-पिलान - मिलान' से खुश हैं । इसका चित्रण रेणु जी ने यों प्रस्तुत किया है - " ऐसा नाच भी कभी नहीं हुआ पहले । कारे और रबिया ही नहीं, हरि - प्रसाद यादव ने एक मैथिल भोजन भट्ट की नकल उतारी और कालाचांद ने खिसियाहा स्टेशन मास्टर साहब का कैरिकेचर दिखाया ।

और इस भोज और नाच के सिलसिले में उस दिन एक नया रिश्ता कायम हुआ । उस दिन अनायास पवित्रा के मुँह से निकल गया - ताले काका [15] ।"

लोक संस्कृति मूलक समाज के गठन के लिए अपनी सत्ता को समाज में विलीन करने का संकल्प पवित्रा के जीवन एवं उपन्यास का उद्देश्य है । पवित्रा को बंगाली और बिहारी लोगों के बीच विच्छिन्नता अच्छी नहीं लगती । इसलिए वह आकस्मिक ओलावृष्टि से त्रस्त लोगों एवं गांवों के लिए चन्दा एकत्र करने के लिए काला चांद घोष की कीर्तन मण्डली के साथ भीख मांगती है, झोली फैला कर । इतना ही नहीं वह पूर्णिया सदर में इन पीड़ित

---

15. फणीश्वरनाथ रेणु:जुलूस, पृ0 सं0 - 96

गांवों की सहायता के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन नरेश वर्मा के साथ करती है । तब वह अपने को अकेला नहीं बल्कि एक विशाल परिवार की बेटी महसूस करती है । पवित्रा जीवन में प्रथम बार अपने को धन्य महसूस करती है । इस संदर्भ में पवित्रा की मन: स्थिति उपन्यास के अंत में उपन्यासकार द्वारा यों व्यक्त की गई है - ".....खोई हुई चीजों का उद्धार करना होगा । अपरिचय, अजनबीपन उदासीनता, अकेलापन, आत्मकेन्द्रिकता, विच्छिन्नता को दूर करके भूले-भटके लोगों को अपने लोगों को पास लौटाकर लाना होगा .....मैं अपनी सत्ता को इस समाज में विलीन कर रही हूँ । लोक संस्कृति मूलक समाज के गठन के लिए आज्ञि आभा के उत्सर्ग कोलाय । आमि जीवने प्रथम बार धन्य हइलाम [16]।"

अतएव "जुलूस" उपन्यास में जुमापुर गोड़ियर, मैमन-सिंह पूर्णिया के एकीकरण का प्रयास सार्थक है । संस्कृतियों का संघर्ष, रुचि और मिलन एक दूसरे को और करीब लाते है । इस प्रकार हम गोड़ियर गांव एवं नबी नगर कॉलोनी के लोगों को देखते, जानते और पहचानते हैं ।

---

16. पगीश्वर नाथ रेणु: जुलूस, पृ० सं० - 156

(ग) आधुनिकता की चेतना:

"जुलूस" उपन्यास में जहाँ एक ओर परम्परागत पुराने विचारों को मानने वाले अन्ध विश्वासी और अशिक्षित लोग हैं, वहीं दूसरी ओर नये विचारों के वाहक शिक्षित और प्रगतिशील सोच के लोग भी हैं । जिस प्रकार " मैला आँचल" में डा० प्रशांत और कालीचरण नवयुग की नवीन चेतना से सम्पन्न है उसी प्रकार "जुलूस" में पवित्रा, नरेश वर्मा, गोपाल पाइन, छोटन बाबू, हरिप्रसाद यादव, रामजय सिंह, सरस्वती सदृश्य पात्र भी नवयुग की ज्योति से जगमग जगमग कर रहे हैं ।

गोपाल पाइन डाकिया से इसलिए लड़ बैठता है कि वह बंगला और अंग्रेजी में पत्रों पर पता लिखा होने के बावजूद पत्रों पर अपनी सुविधा के लिए कैथी लिपि में पेन्सिल से पाकिस्तनी टोला" लिख दिया करता है । गोपाल पाइन इसका विरोध करता है - " इंग्रेजी और बंगला" में साफ-साफ लिखा है नवीन नगर और आप उसके उपर से " आपना-फरमान" लिखा है" पाकिस्तानी टोला ? आप ही लोग माने सरकारी "कर्मचारी" हो कर ऐसा कीजिएगा तो यह राज कैसे चलेगा ? ऐं ? बोलिए ? यहाँ मिनिस्टर

साहब आये थे । आप को मालूम है ? गांव का क्या नाम हुआ यह भी मालूम है ? तख्ती लटका था यह भी मालूम है [17] ।" यही नहीं चूंकि गोपाल पाइन नबी नगर कॉलोनी के प्रस्तावित "मिडिल स्कूल" का मास्टर है इसलिए जब स्कूल के लिए ब्लाक की ओर से एक मुसलमान हेडमास्टर को भेजा जाता है तो गोपाल पाइन गांधी जी की अन्याय विरोध पद्धति का सहारा लेकर स्कूल के बरामदे पर लेट कर अनशन आरम्भ कर देता है । उसने घोषणा कर दी कि - " आमि हंगर स्ट्राइक कोर्बो" गोपाल पाइन के अनशन करने के कारण " हेडमास्टर साहब वापस चले गये । क्योंकि एक डेढ़ घंटे के अनशन से ही सारी कॉलोनी में सनसनी फैल गयी । सभी की आँखो में लाल डोरे उतर आये [18] ।"

" जुलूस" उपन्यास की नायिका पवित्रा आरम्भ से अंत तक प्रगतिशील विचारों की पोषक रही है । इसीलिए वह लोगों के साथ मेल-मिलाप क्या रोटी-बेटी के सम्बन्ध का भी समर्थक है । सन्ध्या और हरिप्रसाद जादव की शादी में पवित्रा का प्रोत्साहन एवं सहमति है । पवित्रा का प्रेमी नरेश वर्मा अपने को जन्मजात इन्कलाबी घोषित करता है

---

17. पद्मीश्वरनाथ रेणु: जुलूस, पृ० सं० - 8
18. ,, ,, ,, पृ० सं० - 132

और स्कूटर के पीछे कोई लड़की या औरत बैठाने को बेहयाई या अनैतिक व्यापार समझने वाले ग्रामीणों की वह खिल्ली उड़ाता है । पवित्रा भी नरेश वर्मा के इस प्रगतिशीलता का समर्थन करती है । उपन्यासकार इस संदर्भ में लिखता है - " पवित्रा ने अपना थैला स्कूटर के सामने लगी टोकरी में डाल दिया और साड़ी के आँचल को कमर में लपेट कर स्कूटर की पिछली गद्दी पर जा बैठी -युवक की पीठ पर एक हाथ डालकर [19] ।" किन्तु पवित्रा की इस प्रगतिशीलता को देख कर कालोनी के सदस्य उसके नाम पर थूकते हैं साथ ही गाली भी देते हैं । फिर भी पवित्रा उन लोगों का परवाह नहीं करती । उसके प्रगतिशील विचारों के विरोध के लिए [redacted] "धर्म रक्षिणी सभा" का आयोजन जिला कॉलोनी कमिटि के सदस्य करते हैं । इस सभा में हरिप्रसाद यादव किसी मिनिस्टर का भांजा निकल जाता है । इसलिए विरोधियों के सरदार पूर्णिया के खुदो बाबू सहित सब चुप हो जाते है किन्तु खुदो बाबू पवित्रा और नरेश वर्मा के सम्बन्धों को लेकर कड़ी आलोचना करते हैं । फिर भी पवित्रा उनकी आलोचनाओं पर कान नही देती । उसका नरेश वर्मा के साथ पूर्ववत् सम्बन्ध बना रहता है ।

---

19. पद्मीश्वरनाथ रेणु: जुलूस, पृ0 सं0 - 107

हरि प्रसाद यादव के पिता एक नम्बर के मुकदमेबाज और गुस्सेबाज हैं । फिर भी पुत्र पिता से नहीं डरता । वह योगेशदास से कहता है - " मौसा ! कीर्तन सीखने की बात तो जाने दीजिए यदि हम किसी " बंगालिन" से शादी करलें इस पर भी कोई बखेड़ा नहीं ....[20] ।" हरि प्रसाद यादव चल चित्रों का शौकीन है और नृत्य कला में प्रवीण भी । जय राम सिंह के भजन गाने पर वह कमर में चादर बांधकर उठ खड़ा होता है और " नागिन" फिल्म का डांस प्रारम्भ कर देता है । रेणु जी लिखते हैं कि " मुक्की बेलाही के उस

गोप को यह गीत सुनकर ऐसी तिलमिली लगी कि कमर में चादर बांध उठ खड़ा हो गया और नागिन का "डानस" करने लगा .....जो कुछ भी हो डानस जानता है मुअरवा । .....जयराम सिंह रह-रहकर हारमोनियम पर "चलंती" देता और हर चलंती पर जादव ऐसा नाचता कि हू-ब-हू "सनीमा" का डानस" [21] ।" इसी प्रगतिशील सोच के कारण वह माता-पिता के विरोध के बावजूद अररिया कोर्ट के हरि-लाल झा वकील से शादी का "मिसिल" बनवाकर सन्ध्या के

---

20. पणीश्वरनाथ रेणु: जुलूस, पृ० सं० - 35

21. ,, ,, ,, पृ० सं० - 50

साथ रजिस्ट्री शादी करता है । हरिप्रसाद यादव का यह कदम इसलिए भी महत्व पूर्ण है कि उसके माता पिता सन्ध्या को बरामदे में ही स्थान देते हैं । किन्तु उन की शादी धीरे-धीरे स्वीकृति में बदल सकती है ।

राम जय सिंह भी गांव भर में "हवाईशार्ट" और "हवाई चप्पल" पहन कर चलता है । यही क्या वह हाट-घाट-बाट में "हवाई प्रचार" भी करता फिरता है । उधर पारस प्रसाद आधुनिकता से ग्रस्त अपनी पत्नी महामाया प्रसाद को "बैकवर्ड" और सरस्वती देवी को "फार्वर्ड" घोषित करता है ।

सरस्वती देवी भी युग बोध से सम्पन्नहै । वह भी नेहरू जी की पुत्री की भांति लीडर बनना चाहती है । इस प्रक्रिया में वह पवित्रा की अप्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धी है । वह स्वार्थानुकूल कम्युनिस्ट पार्टी को स्कूल के लड़कों-लौण्डों की पार्टी कहती है और उसे अभी "कमसिन" घोषित करती है । इसलिए वह नेहरू जी की पार्टी की सदस्य बनना अच्छा समझती है क्योंकि इससे उसे फायदा है । वह अपनी एक पुत्री को लड़कों का लिबास पहनाती है । उसकी योजना है कि वह अपनी पुत्री को वनस्थली विद्यापीठ में भेजकर लाठी

भाला, घुड़सवारी की ट्रेनिंग दिलवायेगी । चाहे लोग जो कुछ भी कहें । रब्बी पासमान जब दीपा को दीपा दाई कहता है तो सरस्वती उससे कहती है कि " दीपा दाई मत कहो दीपा बाबू, कुलदीप सिंघ कहो । दीपा बेटी नही, बेटा है [22]।" इस पर आश्चर्य से रब्बी पासमान कारे मण्डल से पूछता है कि पालवेत यह बात तो आपने कभी नहीं बताया । हमलोगों को तो मालूम है कि लड़की है । मगर असल में लड़का ही है क्या ? [23] " रब्बी पासमान की इस बात पर सरस्वती देवी हँसने लगती है और बड़े गर्व से अपनी लड़की की तुलना तब के प्रधान मंत्री की पुत्री से करती है । कारे मण्डल को सम्बोधित करते हुए वह कहती है कि - "कारे, तुम्हारा पालवेत पदमान नदी के उस पार का रहने वाला है क्या? ....जो बेटी वही बेटा ! नेहरू जी को नहीं जानते ? एक ही बेटी है मगर सौ बेटों का मुकाबला कर रही है । जानते हो ? [24] "

अर्थात् यह कहा जा सकता है कि "जुलूस" में समसामयिकता और आधुनिकता की चेतना का भी प्रकटीकरण हुआ है ।

---

22. पशीश्वरनाथ रेणु: जुलूस, पृ० सं० - 77

23. ,, ,, ,, पृ० सं० - 77

24. ,, ,, ,, पृ० सं० - 77

उपसंहार

उपसंहार

शरणार्थी समस्या ऐतिहासिक विकास के आधुनिक चरण की समस्या है । यह तो नहीं कहा जा सकता कि सभी राष्ट्रों को इस समस्या का सामना ही करना पड़ा हो किन्तु यह सत्य है कि यह उन निहित स्वार्थों के प्रयत्न से उत्पन्न समस्या है जिन्होंने अपनी शक्ति को बनाए रखने के लिए एक सम्प्रदाय को दूसरे सम्प्रदाय के खिलाफ भड़काया । इसका परिणाम यह निकला कि बहुसंख्यक समुदाय ने अल्प - संख्यक समुदाय को या तो अपनी मूल भूमि से खदेड़ दिया या फिर उन्हें पलायन के लिए विवश किया । स्पष्ट है मनुष्य को शरणार्थी बनाने में साम्प्रदायिकता का सबसे बड़ा हाथ है ।

साम्प्रदायिक की उत्पति अंग्रेजी साम्राज्य की भारत मे स्थापना के साथ देखी जा सकती है जिसका प्रभाव भारतीय समाज और अर्थ व्यवस्था पर अद्भूत रूप से पड़ा । हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों ने शिक्षा, संस्कृति, नये व्यवसायों तथा प्रशासन में पद जैसी सुविधाओं को बाद में अपनाया । परिणामत: हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों मे पुरानी परम्पराओं, रवैयों और मूल्यों के पुर्नमूल्यांकन के लिए बौद्धिक

जागरण बाद में हुआ । इस अन्तराल के कारण मुसलमानों के बीच कमज़ोरी तथा असुरक्षा की भावना ने उन्हें परम्परागत विचार प्रक्रिया तथा धर्म पर आश्रित कर दिया । इस प्रकार भारत में साम्प्रदायिकता शैक्षिक, राजनैतिक एवं आर्थिक रूप से असमान विभिन्न सम्प्रदायों के बीच रोजगार के लिए संघर्ष थी । अंग्रेजो ने इसी सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक विषमता का अपने राजनैतिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए उपयोग किया । अंग्रेज इसी परिस्थिति में " फूट डालो और राज करो" की नीति से बहुत दिनों तक दो प्रमुख सम्प्रदायों हिन्दुओं और मुसलमानों को आपस में लड़ाकर शक्ति संतुलन बनाये रखे ।

सर सैयद अहमद ने कांग्रेस का विरोध यह कहकर किया कि वह हिन्दुओं का संगठन है । उन्होंने न सिर्फ मुसलमानों को बहुसंख्यक हिन्दुओं के आधिपत्य का भय दिखाया बल्कि उन्होंने मुसलमानों के लिए अलग से सरकारी नौकरी तथा विधायिका में आरक्षण की मांग की । इसी के समानांतर हिन्दू साम्प्रदायिकता भी फैली । हिन्दू मध्यवर्ग ने इतिहास की औपनिवेशिक व्याख्या स्वीकार कर लिया । हिन्दी को हिन्दुओं और उर्दू को मुसलमानों की भाषा के रूप में प्रचारित किया

गया । मुसलमानों की देखा-देखी हिन्दुओंने भी " हिन्दू सीटों" की आरक्षण की मांग की । ऐसे में मुस्लिम लीग तथा हिन्दू महासभा में प्रतिस्पर्धा बढ़ी । अपनी-अपनी साम्प्रदायिकता के पक्ष में इन दलों ने यह तर्क दिया कि वह तो दूसरों की साम्प्रदायिकता की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है । इस प्रकार एक दूसरे के प्रति अविश्वास की भावना इन दलों ने फैलायी और जन साधारण में साम्प्रदायिकता का प्रचार-प्रसार किया राष्ट्रीय नेताओं द्वारा जाने अनजाने हिन्दू प्रतीकों जैसे गांधी जी का 'रामराज्य' तिलक का 'गणेश पूजा' या क्रान्ति-कारियों का काली माँ की मूर्ति के समक्ष कसम लेना इत्यादि ऐसे कार्य थे जो एक मुसलमान को स्वीकार न थे । इसी प्रकार मुसलमानों ने अपने गौरव तथा महानता के लिए अरब के इति-हास में शरण ली । अंतत: इस प्रकार की प्रक्रियाओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन के संयुक्त प्रयास में बाधा उत्पन्न की ।

बंगाल का विभाजन अंग्रेजो ने प्रशासनिक सुविधा के नाम पर किया था । किन्तु उसका मूल उद्देश्य राष्ट्रवाद को दुर्बल करना और मुसलमानों को आंदोलन से अलग करना था । फलत: स्वदेशी आंदोलन के दौर में पूर्वी बंगाल में दंगे हुए और अलगाव बढ़ा । 1909 में मार्ले मिटों सुधारों ने साम्प्रदायिक आधार पर मतदाता मण्डल बनाए जिससे साम्प्र-दायिक राजनीति को फैलने को एक मजबूत आधार मिला ।

इसी अधिनियम के आधार पर पृथम बार मुसलमानों को आरक्षण दिया गया । 1919 के अधिनियम ने मुसलमानों को अधिक सुविधाएँ देकर एक प्रकार से लखनऊ समझौते को ही अर्थहीन कर दिया ।

पृथक निर्वाचन मंडल के तहत 1937 ई0 में चुनाव हुए । मुस्लिम लीग मई 1937 ई0 में संयुक्त प्रान्त में विधान सभा के उपचुनाव में "इस्लाम खतरे में है" का नारा लगा चुकी थी । खुद जिन्ना ने " अल्लाह" और "कुरान" के नाम पर वोट देने की अपील की थी । इसी प्रकार हिन्दू सम्प्र - दायवादियों ने "हिन्दुत्व खतरे में है" का शोर मचाना शुरू किया । इससे राजनीतिक वातावरण बहुत प्रदूषित हो गया

1940 ई0 में लाहौर अधिवेशन में मुस्लिमलीग ने अलग पाकिस्तान राज्य के गठन की मांग को सर्वसम्मति से पास कर दिया था ।

विभाजन सम्बन्धी संकेत 1942 के क्रिप्स मिशन में मौजूद थे । चक्रवर्ती राजा गोपालाचारी फार्मूले के अनुसार गांधी जिन्ना वार्ता से जिन्ना को अतिरिक्त अखिल भारतीय महत्व मिला हालांकि वार्ता विफल रही । 1945 का शिमला समझौता इसलिए असफल रहा कि जिन्ना ने यह जिद की कि मुस्लिम लीग ही सभी मुस्लिम प्रतिनिधियों को मनोनीत करेगी

जिसको कांग्रेस ने अस्वीकृत कर दिया । पुनः कैबिनेट मिशन में भी मुस्लिम प्रतिनिधियों के मनोनयन पर लीग और कांग्रेस में मतभेद हुआ ।

अंग्रेजों की 'वर्तमान दासता' और 'हिन्दुओं के भावी प्रभुत्व' से छुटकारा पाने के लिए लीग ने 16 अगस्त 1946 को 'प्रत्यक्ष कार्यवाही' का कार्यक्रम रखा । यह इसलिए किया गया कि कांग्रेस दबाव में आकर पाकिस्तान की मांग को स्वीकार करले । प्रत्यक्ष कार्यवाही के कारण बंगाल में भयानक दंगे तो हुए ही इसके साथ ही बिहार सहित कई राज्यों में साम्प्रदायिक दंगे हुए ।

भारत औपनिवेशिक दर्जा देने के नाम पर ब्रिटिश लेबर पार्टी ब्रिटेन में चुनाव लड़कर सत्ता में आ गयी थी । ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधान मंत्री एटली ने ब्रिटिश संसद में घोषणा की कि जून 1948 तक भारतीयों को सत्ता हस्तांतरण कर दिया जायेगा । अंततः 14 अगस्त 1947 को पाकिस्तान तथा 15 अगस्त 1947 को भारत अधिराज्यों की स्थापना हुई ।

बँटवारे से पूर्व न तो दंगों की कल्पना की गई थी और नहीं बड़ी संख्या में लोगों के हस्तांतरण की योजना बनायी गई थी । माना यह जाता था कि जब पाकिस्तानकी मांग

मंजूर कर ली जायेगी तो फिर लड़ने के लिए क्या रह जायेगा ?
किन्तु विभाजन के पूर्व स्थिति जितनी भयंकर थी, विभाजन के बाद उससे ज्यादा भयंकर हो गई । मार-काट, अपहरण, बलात्कार की घटनाएँ पंजाब और बंगाल दो राज्यों में कई दिनों तक चलती रहीं अंतत: लोगों को शरणार्थी बनने के लिए विवश कर दिया ।

हिंसा और विभाजन से प्रभावित पूर्वी बंगाल से लोग भागकर बिहार के पूर्णिया जिले में शरणार्थी बने । -" जुलूस" उपन्यास का सृजन इन्हीं के जीवन के आधार पर हुआ है । जुलूस में शरणार्थियों का सामाजिक जीवन सामाजिक कुरीतियों जैसे जाति प्रथा, अशिक्षा, अंधविश्वास, जादू टोना से भरा पड़ा है जिनके कारण लोगों के बीच बराबर एक दूरी बनी रहती है । यह दूरी अंत: सामाजिक अलगाव को जन्म देती है । सन्ध्या और बिशू की शादी इसीलिए नहीं हो पाती है कि क्योंकि इस मार्ग में महाबाधा जाति-पाँति की ही है । " सन्ध्या की माँ सतगोप है बिशू कैवर्त और कैवर्त से शादी कैसे हो भला ।"

किन्तु साथ-साथ रहने से व्यक्ति-व्यक्ति के बीच सामाजिक अलगाव धीरे-धीरे घटता जाता है तथा लोग एक सामाजिक समायोजन की ओर बढ़ते हैं । पवित्रा अनुभव

करती है कि गोड़ियर उसका खोया हुआ गांव जुमापुर है । खिदाम दास ट्यूबेल गाड़नेवाले कर्मचारी से कहता है कि "ओवरसियेर बाबू देश बोलिए प्रदेश बोलिए कि प्रान्त कहिए अब जो है सो यही नबीनगर ग्राम ही है ।" पवित्रा लोगों के साथ खिलान-पिलान और मिलान का समर्थन करती है । कारे मण्डल रब्बी पासमान जयराम सिंह तथा हरिप्रसाद जादव सभी कीर्तन सुनने गाने के लिए कॉलोनी में जाते है । तालेवर गोदी द्वारा दिया गये भोज में सभी सम्मिलित होते है और एक दूसरे को सामाजिक स्वीकृति देते हैं ।

रेणु जी द्वारा वर्णित जुलूस" में व्यक्ति का रहन-सहन बहुत कुछ अखिल भारतीय औसत ग्रामीण आदमी का रहन - सहन है । नबी नगर कॉलोनी और गोड़ियर गांव के लोग मुख्यत: किसानी करते हैं जिनमें तालेवर गोदी रामचन्द्र चौधरी जैसे बड़े-बड़े भूखण्ड स्वामी भी हैं तो बहुत से लोगों के पास गाय-भैंस बाँधने की जगह भी नहीं है । नबी नगर के लोगों को जो सरकारी पट्टा आवंटित किया गया है उसी पर वे कृषि कार्य करते हैं या फिर फेरी का धन्धा करते है । कॉलोनी का अनंदतर्मन सरकारी लोन का इंतजार कर रहा है कि मिले कि वह चाय की दूकान करे । इसी लोन" की

प्रतीक्षा योगेश दास हरिप्रसाद यादव का कर्ज़ उतारने के लिए करता है । कॉलोनी की औरतें टेबुल क्लाथ, आसनी नेटकवर बटुए इत्यादि "खादी प्रतिष्ठान" के लिए बना कर धनार्जन करती हैं । इसके अलावा बाकी लोग यजमानी, पहलवानी, गाड़ीवानी, घोड़ा लदाई, दुकान, नौकरी, खेती, मजदूरी और चोरी करके जीवन यापन करते हैं ।

कॉलोनी और गोड़ियर दोनों के व्यवसायरत लोग पूंजीवाद के गिरफ्त में हैं । सभी लोग रातोंरात धनवान बन जाना चाहते हैं । तालेश्वर गोदी का बेटा रामजी एक और मिल अररिया कोट में बैठाने की सोच रहा है । पण्डित रामचन्द्र चौधरी सिर्फ धान कूटने वाला और आटा पीसने वाला नहीं -चूड़ा कूटनेवाला तेल पेरनेवाला मिल बैठाने की सोच रहें है और वह ड्योढ़े सूद पर पैसा लगावेगा । उधर विश्टू अब फेरी छोड़कर हाट में दूकान लगाने की सोच रहा है ।

नबी नगर और गोड़ियर गांव की संस्कृति मूलत: वैष्णव ही है किन्तु बंगाली लोग मछली खाने को मांसाहार न मानकार उसे "जलतरोई" कहते हैं । इसलिए गोड़ियर के

लोग उन्हें चिढ़ाते हैं जिससे खीझकर बंगाली लड़के उन्हें "असब्बो" और खोट्टा कहते हैं । बंगाली लोग अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं की अलग पहचान बनाए रहने पर विशेष बल देते हैं खुदो बाबू को गर्व है कि वे तीन-चार पीढ़ी से पूर्णिया जिले में है । किन्तु खुदो बाबू आजतक खुदो बाबू ही हैं खुदो प्रसाद या खुदो सिंह चाहे खुदो वर्मा नहीं हो गये । इसीलिए उन्हें सन्ध्या के बिहारियों जैसी 'एदेशीय' साड़ी पहनते पर आपत्ति है । बंगला कीर्तन का "मिष्टीगान" सुनने के लिए गोड़ियर के लोग लालायित हैं किन्तु "कोलनी रधादल" और उसकी "सीटी" के भय से वे कॉलोनी के आस पास भी नहीं फटकते ।

किन्तु कुछ लोग एकी करण की दिशामें प्रयास करते हैं और एकीकरण की प्रक्रियाको जन्म देते हैं । पवित्रा अधिकाधिक हिन्दी बोलती है तथा उसे लोगों के साथ रोटी-बेटी का सम्बन्ध बनाने पर भी आपत्ति नहीं है । कारे और रब्बी दोनों अद्भुत खिचड़ी बंगला बोलते हैं और पण्डित रामचन्द्र चौधरी भी बंगला समझने का दावा पेश करते हैं क्योंकि उनकी सारी उम्र ही बंगाल मुल्क- में कटी है । जयराम सिंह भी बंगला में नकल कर के दोहा सुनाता है और [redacted]

नवीनगर के लोगों को हँसा कर लोट-पोट कर देता है । सन्ध्या न सिर्फ़ बिहारियों की तरह साड़ी-गहना पहनती है बल्कि वह हिन्दी पढ़ना ज्यादा पसन्द करती है । उसका उच्चारण भी ठेठ बिहारियों जैसा है । वह विद्यापति का गीत गाती है । अंतत: वह हरिप्रसाद की प्रेमिका से पत्नी बनती है, जो सांस्कृतिक एकीकरण या मेल-मिलाप की चरमावस्था है ।

हरिप्रसाद यादव अपने पिता की इच्छा के विरूद्ध सन्ध्या से शादी करता है । पारस प्रसाद अपनी पत्नी को "बैकवर्ड" और सरस्वती देवी को "फारवर्ड" घोषित करता है । सरस्वती खुद लीडर बनना चाहती है । वह अपनी एक मात्र पुत्री को वनस्थली विद्यापीठ में भेजकर लाठी, भाला, घुड़सवारी की ट्रेनिंग दिलानी चाहती है । वह अपनी पुत्री की तुलना तब के प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू की पुत्री से करती है ।

इस प्रकार "जुलूस" में लोगों का सांस्कृतिक जीवन न सिर्फ़ सांस्कृतिक अलगाव के बाद सांस्कृतिक एकीकरण की ओर अग्रसर होता है बल्कि उसके पात्र सामाजिक युग बोध और आधुनिकता की चेतना से भी सम्पन्न हैं ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

लेखक का नाम:	रचना एवं प्रकाशन
क. आधार ग्रंथ:	जुलूस
1. फणीश्वर नाथ रेणु:	भारतीय ज्ञान पीठ, लोदीरोड, नई दिल्ली , प्रथम पेपर बैक संस्करण, 1987
ख. सहायक ग्रंथ:	
1. ए0 आर0 देसाई	भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि मैकमिलन इण्डिया लिमिटेड नई दिल्ली, बम्बई, मद्रास, कलकत्ता प्रथम हिन्दी संस्करण , 1976
2. अयोध्या सिंह:	भारत का मुक्ति संग्राम मैकमिलन इण्डिया लिमिटेड नई दिल्ली, बम्बई, मद्रास, कलकत्ता प्रथम संस्करण : 1977
3. बिपिन चन्द्र:	भारत का स्वतंत्रता संघर्ष हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली प्रथम संस्करण : 1990

4. चन्द्रभानु सोनवणे: कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु
पंचशील प्रकाशन ,
पिंक्म कालोनी, जयपुर ,
संस्करण: 1979

5. कुसुम सोफ्ट : फणीश्वरनाथ रेणु की उपन्यास कला
वसुमती
38, जीरो रोड, इलाहाबाद
पृथम संस्करण : 1968

6. गांधी जी राय: राष्ट्रीय आंदोलन और भारतीय संविधान
भारती भवन, पटना
पंचम संस्करण: 1985

7. संम्पादक,
रामलखन शुक्ल: आधुनिक भारत का इतिहास
हिन्दी माध्यम कार्यान्वय -
निदेशालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
पृथम संस्करण: 1987

8. सत्यमित्र दूबे
दिनेश शर्मा
समाजशास्त्र: एक परिचय
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
प्रथम संस्करण: 1989

ग. पत्र पत्रिकाएँ:

1. विपक्ष: फणीश्वर नाथ रेणु अंक 5/ 6 जुलाई 1991